CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय, भदैनी, वाराणसी-५

7'1

संगीत सुधा सागर

प्रथम भाग

ग्रन्थालय
...दैनी, वाराणसी-५
...:3/63

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

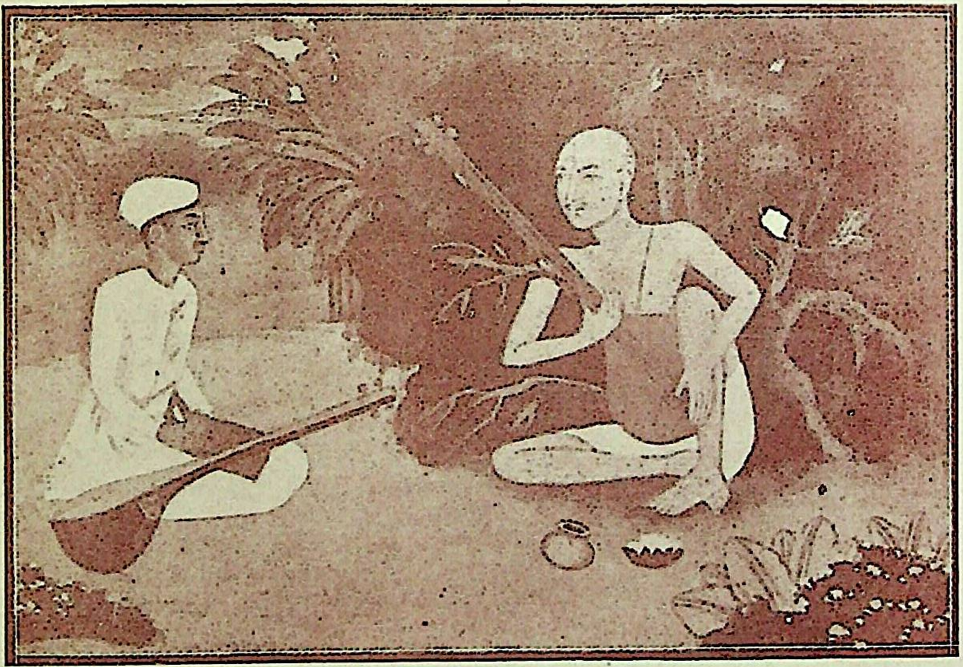

दाईं ओर—प्रातः स्मरणीय योगी गायक स्वर्गीय हरिदास स्वामी जी
बाईं ओर—प्रातः स्मरणीय जगद्विख्यात संगीत गुरु तानसेन जी

आ: 3/63
आम्नाय-ग्रन्थालय, भारतनिधि, करौंदी वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

श्री श्री विश्वेश्वरान्नपूर्णाभ्यां नमः ।
श्री श्री भगवते विष्णवेनमः ।
श्री श्री सरस्वत्यै नमः ॥

॥ सङ्गीत सुधा सागरः ॥

—ः अथ मंगलाचरणम् ः—

गणेशं शंकरं विष्णुं वाणीं देवर्षिनारदम् ।
विद्यागुरूंस्तथा नत्वा गीतशास्त्रप्रवर्त्तकान् ॥
चट्टोपाध्यायवंशीय श्रीप्राणकृष्णशर्मणा ।
बालबोधाय "संगीतसुधासागर" संज्ञकः ॥
निबन्धोऽयं यथाबुद्धि लिख्यते मतिचापलात् ।
सद्भिरत्र विनिःक्षेप्या दृष्टिः करुणया भृता ॥
संगीतं प्रविविक्षूणां स्वल्पापि चेत्सहायता ।
भवेदेतेन, तेन स्याद् ग्रन्थकर्तुः कृतार्थता ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समर्पण

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

स्वर्गीय

उपेन्द्रनाथ राय बी० ए० बी एल०

तानसेन परम्परा के अधिकारी

स्वर्गीय

निहालसेन जी

तथा

स्वर्गीय

अब्बन खाँ साहब महाराजाधिराज प्रतापगढ़ के सभागायक

गुरु देवों के श्री चरणों में

अधम शिष्य की क्षुद्र भेंट स्वीकृत हो।

शिष्याधम

श्री प्राणकृष्ण चट्टोपाध्याय

विनीत ग्रन्थकार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जगद्विख्यात संगीत-परमाचार्य तानसेन जी के वंशज स्वर्गीय गुरु निहाल सेन जी
(स्वर्गीय महाराजा बहादुर माधव सिंह जी के दरबार के ध्रुपद ख्याल गायक
और बीणा सूर शृंगार वादक)
[जयपुर, राजपूताना]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

True copy.

Telephone : **584** *Telegram* : **Theosophy**

SHREE BHARATIYA SANGEET VIDYALAYA,
THEOSOPHICAL SOCIETY.

Directors,

DAGAR BROTHERS.

KAMACHHA,
BANARAS 1, U. P.
Dated 8th December, 1955.

I read the Manuscript of 'Sangit Sudha-Sagar written by Shri Pran Krishna Chatterji (Panoo Babu). Really speaking the book in a result of Shri Chatterji's incessant and hard labour throughout his life. Through this valuable book Shri Chatterji can be credited to bring before the lovers of Indian music the real traditional knowledge of ancient compositions of classical music, namely Dhrupad and Dhamar in a written order. I have immensely liked the whole collection and I hope that all my other fellow artists will also pay due reverence to the genius of the old aged scholar artist Shri Chatterji by hailing this monumental work in which Shri Chatterji has collected various compositions of Dhrupad and Dhamar which he, as a disciple, has derived from my own gharana (Dagar Gharana) as well as from Seni Gharana of Mian Tansen.

I shall like to suggest to the educational institutions concerned with music, to adopt this precious book in this course of their studies.

Sd. Nasir-Muinuddin Dagar.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

COPY.

अल्लाहुउद्दीन खाँ साहब लिखते हैं :—

I have gone through the entire manuscript of "Sangeet Sudha Sagar" compiled and composed by Shree Pran Krishna Chatterjee. He has taken immense pains to complete it.

I hope it will do real service to the students of Classical Music. I wish it may capture a very broad field.

Sd. Shree Allahuddin Khan
5—10—47

कुमार श्रीवीरेन्द्र किशोर राय चौधुरी (गौरी पुर स्टेट) लिखते हैं :—

In the different volumes of his treatise, revered Pran Krishna Chatterji has most flawlessly composed and cp,|o;ed varopis Ragas and Raginis. His historical researches are also painstaking and highly industrious. The method in his music are in accordance with the Tansen School of Music. If deligently gone through it can give Kernel of Hindu-Music. I wish his book and his knowledge may have the broadest scope of instructing the mass.

Sd. Shree Birendra Kishore Roy Choudhury
28—12—41.

मन्त्री श्री कमलापति त्रिपाठी लिखते हैं :—

I have genuine pleasure to certify that Shree Pran Krishna Chatterjee Head of the Department of Classical Music Sangeet Samaj, Banaras, and an eminent musician of All India repute has made extensive research work on Ancient Indian Music, of which he has made a special study. His voluminous work "Sangeet Sudha Sagar" which is still in manuscript stage, speaks highly of his intensive study and talents.

Sd. Kamala Pati Tripathi.
13—4—53.

Mahamahopadhyaya,
Gopi Nath Kaviraj,
M. A., D. Litt.,

2/A, Sigra,
BANARAS.
3-12-52.

I have glanced through the pages of a portion of Shree Pran Krishna Chatterjee's 'Sangit Sudha Sagara', a voluminous work on ancient Indian Music, of which he has made a special study under the guidance of distinguished experts. The Introduction contains a brief but interesting survey of the history of Music culture in North India. From the high opinion expressed on the work by well known specialists it appears that the book, which is intended for the use of beginner and advances students alike, should be published without delay. The author who has devoted his whole life to the cultivation of Indian Music on ancient lines is now in great pecuniary troubles in his old age. He certainly deserves to be liberally patronized by government in recognition of his life long devotion and labours.

Sd. Gopi Nath Kaviraj

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सांकेतिक चिह्न ।

प्रत्येक स्वर एक मात्रा – यथा – स – ।
एक मात्रा से २, ३, ४ इत्यादि स्वर – यथा – सर, स र ग, स र ग म इत्यादि ।

१, २, ३, ४, इत्यादि संख्या ताल के लिये हैं ।
× सम का चिह्न । (सम, अर्थात् विश्राम स्थान)
०, फाँक का चिह्न ।
उदारा ग्राम के स्वरों के नीचे और तारा ग्राम के स्वरों के ऊपर विन्दु ० चिह्न रहेगा ।
मूर्छना का चिह्न :—〰〰〰〰
गमक का चिह्न – ⌒ ।
मीड़ का चिह्न – ∽ ।
हुँकार गमक का चिह्न – ⌒ ।
तीव्र चिह्न – ^ (यथा तीव्र में)
कोमल चिह्न = — (यथा र॒, ग॒, ध॒, नि॒, कोमल)
श्रुतिका चिह्न = 〰〰〰 ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस पुस्तिका में आये हुये ताल

चौताल = १२ मात्रा

×	०	२	०	३	४
१ २	३ ४	५ ६	७ ८	९ १०	११ १२
ठेका = धा धा	दिन् ता	कत् धागे	दिन् ता	तिटि कता	गदि गन

धमार = १४ मात्रा

×	२	०	३
१ २ ३ ४ ५	६ ७	८ ९ १०	११ १२ १३ १४
क धे टे धे टे	धा ऽ	ग दि न	दि न ता ऽ

सुरफाँक ताल = १० मात्रा

×	०	२	३	०
१ २	३ ४	५ ६	७ ८	९ १०
धा घेड़े	नगु दीं	घेड़े नगु	गदु दी	घेड़े नगु

मोहन ताल = १३ मात्रा

×	०	२	०	३	४
१ २ ३	४ ५	६ ७	८ ९	१० ११	१२ १३
धा दिन् ता	किट धा	दिन् ता	कत् धा	तिटि कत	गदि गन

शिखर ताल = १७ मात्रा

×	०	३	४
१ २ ३ ४ ५ ६	७ ८ ९ १० ११ १२	१३ १४	१५ १६ १७

मणि ताल = ११ मात्रा

×	२	३	४
१ २ ३	४ ५	६ ७ ८	९ १० ११

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषय-सूची

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	प्रस्तावना	
२.	ध्रुपद	क
३.	नाद	ख
४.	नाद तत्त्व	ग
५.	श्रुति चक्र, मूर्च्छना	घ
६.	पंचदश मेल और भेद	ङ
७.	सर्वकालीन गेय राग रागनियाँ	च
८.	विकृतस्वर की तान	छ
९.	रागिणी प्रथम मञ्जरी (चौताल)	१
१०.	प्रथम मञ्जरी (धमारा)	५
११.	रागिणी गुर्जरी	६
१२.	,, दक्षिणी गुर्जरी (चौताल)	७
१३.	,, ,, ,, (धमार)	११
१४.	श्री टङ्की	१२
१५.	,, ,, (धमार)	१३
१६.	धवल श्री (चौताल)	१५
१७.	,, ,, (धमार)	१८
१८.	योगिनी (चौताल)	१९
१९.	,, (धमार)	२२
२०.	सुरालय (चौताल)	२३
२१.	,, (धमार)	२५
२२.	बड़हंसी (सुरफांक ताल)	२६
२३.	,, ,, (धमार)	२९
२४.	लंक-दहन सारंग (चौताल)	३०
२५.	,, ,, ,, (धमार)	३३
२६.	सुघरई (मोहन ताल)	३४
२७.	,, (धमार)	३७
२८.	मुद्राकी कन्हाड़ा (चौताल)	३८
२९.	,, ,, (धमार)	४०
३०.	अथ दीपक राग	४१
३१.	राग दीपक (मणिताल)	४२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
३२.	राग नट नारायण (चौताल)—विलम्बित	४५
३३.	राग नट नारायण (धमार)...	४८
३४.	पुरानी मल्हार (चौताल) विलम्बित	४६
३५.	„ „ (धमार)	५१
३६.	स्वर विस्तार	५३-५६
३७,	श्री टंकी (चौताल)	५७
३८.	परिशिष्ट	५६
३९.	शुद्धि पत्र	६१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रस्तावना

आज जिन महान् आत्माओं की कृपा से मुझे "संगीत सुधासागर" में तैरने का मौका मिला उन्हें बार-बार प्रणाम करता हूँ, ताकि इस अन्तिम अवस्था में मुझे उन्हीं की कृपा रूपी शक्ति पार लगाये, जिन भारतीय गुणियों से मुझे उत्साह तथा समर्थन मिला तथा जिनकी प्रेरणा ने ही मुझे आज यह सौभाग्य प्राप्त कराया उन्हें मेरा हार्दिक धन्यवाद प्राप्त हो।

भारतीय सङ्गीत अतीव प्राचीन है। यह अभीतक सिद्ध नहीं हो सका कि भारतीय सङ्गीत का वर्त्तमान रूप प्राचीन सङ्गीत के रूप की प्रतिच्छवि है या नहीं।

प्राचीन काल में ध्रुवपद सङ्गीत प्रत्येक रस में मृदङ्ग के साथ ही गाया जाता था, परन्तु वर्त्तमान काल में "परिवर्त्तनशील जगत्" के प्रमाणानुसार सङ्गीत भी परिवर्त्तित हो कर सङ्गीत सुधा सागर में नियत भासमान हो रहा है तट का पता नहीं। भारतीय सङ्गीत में किम्वदन्तियों की कमी नहीं। राग तथा रागिणियों की शक्ति उनके स्वरूप गुणावगुण ये सभी प्राचीन मनीषियों के ग्रन्थों में पाये जाते हैं, परन्तु आधुनिक प्रकाशकों के प्रकाशन पद्धति में और उनमें विल्कुल सामञ्जस्य नहीं दिखलाई पड़ता।

प्राचीन ध्रुवपद सङ्गीत लुप्त होना चाहता है ऐसा जान कर उसे पुनर्जीवित रखने की अभिलाषा से कुछ पुराने घरानों के गीतों को इस पुस्तक में स्वरलिपि के साथ लिखने का प्रयास किया हूँ, मुझे आशा है कि गुणवान् पाठक मेरे प्रयास को सफलीभूत करेंगे तथा ध्रुवपद सङ्गीत को पुनर्जीवन देंगे।

आरम्भ में मैंने सिर्फ १३ अप्रचलित रागों में ही ध्रुपद के गाने धमार, चौताल, झंपताल, मोहन ताल, इत्यादि के दिये, आगे चलकर विशद् रूप से इसे प्रकट करने की इच्छा रखता हूँ। पर परमपिता परमेश्वर की इच्छा ही प्रबल है।

महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथजी कविराज तथा बनारस के स्वनामधन्य रईस बाबू किशोरी रमणजी आदि सज्जनों की कृपा ही मेरा पाथेय है मेरी आशा सफलीभूत होकर मेरे सारे हितैषियों को तृप्त करें भगवत् चरणारविन्द में यही प्रार्थना है।

विनीत
ग्रन्थकार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्रुपद

संगीत शास्त्र के न्याय प्राचीन शास्त्र वेद चतुष्टय से अभिन्न हैं और इस भूमण्डल में और कोई शास्त्र नहीं है; सामवेद इसका सर्वश्रेष्ठ प्रमाण है। कुरुक्षेत्र के युद्ध समाप्ति के पश्चात् भारतवर्ष अवसाद रूपी निद्रा से अभिभूत हो चुका है इसलिये भारतवर्ष की सम्पूर्ण शक्ति जड़ताग्रस्त हो चुकी है और इस प्रकार विद्या के सम्पूर्ण उन्नति के मार्ग बन्द हो चुके हैं; ऐसा आधुनिक विद्वानों का विचार है। यह विचार सर्वमान्य है ऐसा हम लोग भी विचार करते हैं। प्रातः स्मरणीय अकबर बादशाह के शासन काल में संगीत विद्या का फिर से अभ्युदय हुआ था और संगीत गुरु हरिदास स्वामी के शिष्य प्रातः स्मरणीय तानसेन जी ने आर्य संगीत को पुनर्जीवन प्रदान करके विश्वब्रह्माण्ड को विमोहित और आश्चर्यित कर दिया था। बादशाह के दरबार में तानसेन, 'बकूसू' इत्यादि गुणी लोग नव्य ध्रुपद संगीत आदि के प्रवर्त्तक थे। उनके द्वारा रचित गीतों के भाव, भाषा, एवं सुर सब प्रकार से श्रेष्ठ हैं, और वही सब संगीत भण्डार के अमूल्य रत्न हैं। किन्तु वह ध्रुपद सब विस्मृति पूर्ण होने से संगीत शास्त्र एक दम दरिद्र एवं श्रीहीन हो जायेगा, तब संगीतज्ञगण उक्तगीत के अमृतमय रसास्वादन से वञ्चित हो जायेंगे। उक्त ध्रुपद शिक्षा की साधना करने से संगीत शास्त्र का सविशेष ज्ञान लाभ कर सकते हैं, इस कारण से ध्रुपद संगीत को सुरक्षित रख कर और भारतीय सन्तति उस गीतों की साधना करके उसके सम्मान की रक्षा की। इसलिये मैं अत्यन्त परिश्रम के साथ उक्त गीत समूह एवं प्रातः-स्मरणीय तानसेन बैजूबावरा, गोपाल नायक, सूरदास जी के समय के ध्रुपद को स्वर लिपि के साथ लिपिबद्ध करके सर्वसाधारण में प्रचारित किया। प्राचीन ध्रुपद आदि, खयाल, भजन, एवं टप्पा सरगम इत्यादि की रक्षा करके अपने कुछ मित्रों के ऐकान्तिक इच्छा से हमने उक्त गीतों को स्वर लिपि और सरगम आदि से गुणग्राही बनाकर सुनने वालों के रसास्वादन के लिये पुस्तक रचना किया। गुणी लोग एवं सर्वसाधारण यदि इस ग्रंथ से आनन्द और ज्ञान प्राप्त कर सकें तो मैं अपना परिश्रम सार्थक समझूँगा।

गीत, वाद्य, एवं नृत्य, इन्हीं तीनों को तौर्यात्रिक कहते हैं और इन्हीं तीन विषयों को लेकर संगीत शास्त्र की रचना हुई है; उक्त विषयों के गुणों से परिचित होकर उक्त तौर्यात्रिक के लिये ही यह ग्रंथ विरचित होकर द्वादश खण्डों में परिणत हुआ है, उसके प्रथम खण्ड के प्रथम अंश से चालिस पृष्ठ मात्र ग्रहण करके पुस्तकाकार का यह संक्षिप्त खण्ड प्रकाशित हो रहा है।

ध्रुपद संगीत और प्रसिद्धगायकों के उत्कृष्ट स्वरगम आदि सम्मिलित हैं। उक्त गीत आदि और स्वरगम आदि प्रसिद्ध गुणियों के सम्मुख गाने योग्य हैं और विशुद्ध राग एवं रागिनी द्वारा स्वर लिपि कृत है। उन सबकी शिक्षा प्राप्त करने से विशुद्ध राग रागिनी के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा। एवं प्राचीन ताल सम्बन्धी भी ज्ञान प्राप्त होंगे और विशेष कर लय-मात्रा का ज्ञान प्राप्त होंगे।

षटपदी ध्रुपद उत्तम, पंचपदी ध्रुपद मध्यम और चतुष्पदी ध्रुपद कनिष्ठ ऐसा संगीत शास्त्र में वर्णित है। ध्रुपदमें तीन भाग होते हैं, प्रथम उद्ग्राह, द्वितीय ध्रुवक और तृतीय आभोग। ताल, मान और रमके साथ पूर्वोक्त षटपद के दो पद उद्ग्राह में, दो ध्रुवक में और दो पद आभोग में विभक्त होंगे। आभोग में कवि और नायक का नाम रहेगा। पहले उद्ग्राह भाग गाकर उसके बाद ध्रुवक गाना होगा। ध्रुवक और उद्ग्राह के बीच में अन्तरा ध्रुव, उसके बाद आभोग ध्रुव गाना पड़ता है ऐसा शास्त्र में वर्णित है। प्राचीन, संगीत शास्त्रज्ञों ने उद्ग्राह को ही प्रथम पाद कहा है, (अस्थायी) पूर्वपद उद्ग्राह पहले गाकर स्थापन करने के कारण ध्रुवक कहा गया है। जिस स्थानपर कवि का नाम कहा जाता है उसे आभोग कहते हैं। हर प्रकारके ध्रुपद में वही क्रम है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्रुवक सोलह प्रकारके होते हैं यथा १—जयन्त २—शेखर ३—उत्साह ४—मधुर ५—निर्मल ६—कुन्तल ७—कमल ८—सावेद ९—चन्द्रशेखर १०—सुखद ११—कुमुद १२—जाई १३—कन्दर्प १४—जय-मंगल १५—तिलक १६—ललित। ध्रुपद का एक-एक पाद एकादश अक्षर से एक एक बढ़कर २६ अक्षर होगा। ११ अक्षर से शुरु कर उद्ग्राह में २२ अक्षर, ध्रुवक में २४ अक्षर और आभोग में २६ अक्षर इस प्रकार पहले रचना होती थी, अब भी इसी प्रकार से होना चाहिये। पंचपाद ध्रुवक में एक ही पद के द्वारा ध्रुव होगा और चतुष्पाद ध्रुवक का ध्रुव अलग नहीं है। वारबार आवृत्ति को ध्रुव कहा जाता है।

उद्ग्राह—अस्थायी या स्थायी, उद्ग्राह के वीच का खण्ड अन्तरा, उसके बाद के खण्ड को ध्रुव या संचारी और आभोग नाम से संगीत शास्त्र में वर्णित है। ध्रुपद—प्राचीन काल में ३-३ खण्ड में ६ पक्तियों में ध्रुपद संगीत की रचना की जाती थी, इसलिए स्थायी, अन्तरा और आभोग शास्त्र में उल्लिखित हैं। परन्तु आजकल ४-४ खण्डमें ध्रुपद रचना होने लगी है इसलिए स्थायी, अंतरा, संचारी और आभोग इन चार खण्डों के चार पृथक् पृथक् नाम रखे गये हैं। ध्रुपद सामवेद गान के राग रागिनी में और छन्द में लिखा जाता था इसलिए ध्रुपद को जगत् श्रेष्ठ गीत समझा जाता था। आजकल चार प्रकार के ध्रुपद प्रचलित हैं—१—खाण्डार वाणी २—गौखहार वाणी या गौरवहार वाणी, ३—नौहार वाणी या नवहार वाणी (द्वितीय-तृतीय तानसेन कृत हैं) ४—डागर वाणी (यह किसके द्वारा रचित है इसका कुछ इतिहास नहीं मिलता, अनुमान किया जाता है कि यह बेतिया के महाराज बहादुर नवलकिशोरजी कृत है)। उनमें से अधिकांश ध्रुपद वंग प्रदेश में प्रचलित हैं इन ध्रुपदों में मूर्च्छनाओं का लेशमात्र भी नहीं है और इन्हें अल्पाभ्यास से ही सीखा जा सकता है। कई गुणी-जनों और श्री भातखण्डेजी ने अपनी पुस्तक में इसका वर्णन किया है कि मूर्च्छनाहीन ध्रुपद सीखने से शारीरिक कार्य नहीं होता और आत्मोन्नति भी नहीं होती क्योंकि ध्रुपद संगीत में बहुत से गुप्त विषय हैं जिन्हें सभी लोग नहीं जानते। मूर्छना में यौगिक कार्य होते हैं। मूर्छना से शरीर के अभ्यन्तर की शिराओं की उन्नति होती है और कण्ठस्वर मार्जित होकर नादस्वर स्फुरित होता है, नाद स्वर की स्फूर्ति ही संगीत का उद्देश्य है। मूर्च्छना साधन से चित्त स्थिर होता है और स्वयं मुग्ध होकर अन्य व्यक्तियों को भी मोहित किया जा सकता है। संगीत-साधना का मुख्य उद्देश्य नाद स्वर को जागृत करना ही है। यदि इस उद्देश्य की पूर्ति न हुई तो संगीत साधना व्यर्थ ही है। अतः परम निष्ठा के साथ संगीत-साधना करनी चाहिये और साथ ही सद्गुरु से शिक्षा भी अवश्य लेनी चाहिये।

मूर्च्छनायुक्त ध्रुपद का सद्गुरु के साथ कुछ दिन अभ्यास करने से ही विशेष मानसिक आनन्द का अनुभव होगा। ध्रुपद ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष दान करता है। ध्रुपद से ही ख्याल, टप्पा, ठुमरी, भजन आदि संगीतों की उत्पत्ति हुई है और ध्रुपद के ही ताल मूर्च्छना आदि से ख्याल आदि की उत्पत्ति हुई है। ध्रुपद ही आदि श्रेष्ठ संगीत हैं प्राचीन काल में भरत, कण्व, शृंगार आदि ऋषियों ने देवादिदेव महादेव से साम वेदानुसार संगीत सीखकर और राग तथा रागिनियों का स्वरूप जानकर संगीत शास्त्र के उच्चकोटि के ग्रन्थों का निर्माण किया है। ये ग्रन्थ हम लोगों के उपकार के लिए ही लिखे गये थे परन्तु हम लोग काल प्रभाव से संस्कृत विद्या से वंचित हो गये और आज महान्धकार में डूबे हुए हैं। इन पुस्तकों का आदर न करने से ही आज संगीतशास्त्र का घोर पतन हुआ है।

नाद

नाद का अर्थ ध्वनि। नाद ध्वनिविशेष को कहते हैं? शास्त्रों में ऐसा है कि आकाश से नाद उत्पन्न होता है। वही नाद ही किसी वस्तु में आघात पाकर के वायु के संयोग से सुनाई पड़ता है। यह नाद दो प्रकार के होते हैं। (१) वर्णात्मक, (२) ध्वन्यात्मक। "नाद विन्दु" से ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरादि पृथ्वी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और हर चीज का उद्भव हुआ है, और चारो वेद भी नाद के अन्तर्गत है सामवेद से ही सामगान की सृष्टि और सामगान से ध्रुवपद या "ध्रु पद" की सृष्टि हुई है। कण्ठ तालु आदि के आघात से पाये गये नाद को वर्णात्मक नाद कहा जाता है, जैसा गाना किताब पढ़ना आदि। कोई वस्तु में दूसरे किसी वस्तु के आघात से उत्पन्न नाद को ध्वन्यात्मक नाद कहते हैं, जैसे पखोआज घंटा बजाने का शब्द। शब्द ही नाद है। नाद का प्रधान कारण आकाश है। वायु के सहयोग से नाद उत्तम प्रकार से पाया जाता है। आहत नाद यदि सृष्टि से उत्पन्न होकर अपने स्वरूप में आ जाय तो नाद के द्वारा उपासना से चित्त का विनोदन और संसार के बन्धनों का छेदन हो सकता है।

आसीद्विन्दुस्ततो नादो नादाच्छक्तिःसमुद्भवः। नादरूपा महेशानि चिद्रूपा परमा कला॥
नादात्मैव समुत्पन्ना अर्धविन्दुमहेश्वरी। सार्द्धत्रितय विन्दुभ्यो भुजंगी कुलकुण्डली॥
त्रिगुणा स्वगुणा देवी ब्रह्मरूपा सनातनी। चैतन्यरूपिणी देवी सवभूत प्रकाशिनी॥
आनन्दरूपिणी देवी ब्रह्मानन्द प्रकाशिनी। इति विन्दोरादौ उत्पत्तिरुक्ता सा आम्नायभेदेन विविधा॥

'प्राणतोषिणी—जीवानन्द विद्यासागर'
(३ या संस्करण १२ पृष्ठ)

पहला नाद विन्दु; विन्दु से ही शक्ति का उद्भव हुआ है और उक्त "नाद" ही ज्ञानरूपी श्रेष्ठ विद्या है। भगवान शङ्कर देवी पार्वती से कहते हैं,—"हे महेश्वरी नाद से ही अर्धविन्दु की उत्पत्ति हुई है। सार्द्धत्रिवलयाकृति (तीन फेर से साँप के आकार में) मूलाधार चक्र में स्वयम्भु लिंग को घेर कर रहता है। उक्त कुल कुण्डलिनी शक्ति निर्गुण और साथ साथ सगुण भी हैं। वही नित्या और ब्रह्मरूपा और वही चैतन्यरूपिणी, सर्व जीवात्मा प्रकाशकारिणी यानी सर्वभूत सृष्टि कारिणी आनन्ददायिनी ब्रह्मानन्द प्रकाशिनी, वही आदि और अनन्त रूपिणी हैं। "नाद विद्या" साधन की वस्तु है; और इसका पार नहीं है। श्रीनाथस्वामी कृष्णस्वामी और उनके शिष्य बैजुबावरा कुन्दन स्वामी हरिदास स्वामी, तानसेन जी, तुलसीदास जी, सूरदास जी, मीराबाई, सहोजा बाई, राम प्रसाद आदि प्रातःस्मरणीय संगीत साधक और साधिकायें नाद विद्या का और संगीत विद्या का साधन कर अन्त में आनन्दमयी के चरणों में आश्रय पाकर अमरत्व पा चुके हैं। नाद विद्या के साधन से धर्म्म, अर्थ काम, मोक्ष मिल सकते हैं।

नाद तत्त्व

(६ प्रकार के नाद)

अविकृतनाद, शून्यनाद, स्पर्शनाद, नाद नाद, ध्वनिनाद, विन्दुनाद, शक्तिनाद, जीवनाद, अक्षरनाद। प्रत्येक के अन्त में नमः बीज जोड़कर यथाक्रम मस्तक, ललाट, मध्य, नासिका, मुख, कण्ठ, हृदय, नाभि, मूलाधार इस ६ अंग में ६ नाद न्यास करने का नियम शास्त्रों में उल्लिखित हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रुति चक्र

सप्तस्वर	श्रुति	
	तीव्रा	
१—स षड्ज	कुमुद्वती।	४
मन्द्रा।		
छन्दोवती।		
२—ऋ रीषभ	दयावती।	३
रञ्जनी।		
रतिका।		
३—ग गान्धार	रौद्री।	
	क्रोधी।	२
४—म मध्यम	बज्रिका।	४
	प्रसारिणी।	
	प्रीति।	
	मार्जनी।	
५—प पञ्चम	क्षिति।	४
	रक्ता।	
	सन्दीपनी।	
	आलापनी।	
६—ध धैवत	मदन्ती।	३
	रोहिनी।	
	रम्या।	
७—नि निषाद	ऊग्रा।	२
	क्षोभिनी।	
	श्रुति	२२

संगीत रत्नाकर, संगीत महोदधौ, संगीत समय सार।

मूर्च्छणा

१	स र ग म प ध न	न ध प म ग र स	इति उत्तर मन्द्रा।
२	ऩ स र ग म प ध	ध प म ग र स ऩ	इति रजनी।
३	ध़ ऩ स र ग म प	प म ग र स ऩ ध़	इति उत्तरायता।
४	प़ ध़ ऩ स र ग म	म ग र स ऩ ध़ प़	इति शुद्ध षड्जा।
५	म़ प़ ध़ ऩ स र ग	ग र स ऩ ध़ प़ म़	इति मात्सरी कृता।
६	ग़ म़ प़ ध़ ऩ स र	र स ऩ ध़ प़ म़ ग़	इति अश्वकान्ता।
७	ऱ ग़ म़ प़ ध़ ऩ स	स ऩ ध़ प़ म़ ग़ ऱ	इति अभिरुद्गता।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निम्नलिखित मूर्च्छनायों मध्य ग्राम के (मध्य सप्तक) मध्य से पहली मूर्च्छना आरम्भ हुआ है। तृतीय सप्तक का गान्धार स्पर्श करता हुआ लौट आ कर द्वितीय मूर्छना का द्वितीय सप्तक का आरम्भ होगा।
संगीत समय सार, संगीत रत्नाकर, भरत शुत्र।

१	म प ध न सं रं गं	गं रं सं न ध प म	इति सौविरी।
२	ग म प ध न सं रं	रं सं न ध प म ग	इति हरियाश्वा।
३	र ग म प ध न सं	सं न ध प म ग र	इति कलोपनता।
४	स र ग म प ध न	न ध प म ग र स	इति शुद्धामध्या।
५	ऩ स र ग म प ध	ध प म ग रे स ऩ	इति मार्गी।
६	ध़ ऩ स र ग म प	प म ग र स ऩ ध़	इति पौखी।
७	प़ ध़ ऩ स र ग म	म ग र स ऩ ध़ प़	इति हृष्यका।

१	ग म प ध न सं रं	रं सं न ध प म ग	इति नन्दा।
२	र ग म प ध न सं	सं न ध प म ग र	इति विशाला।
३	स र ग म प ध न	न ध प म ग र स	इति सुमुखी।
४	ऩ स र ग म प ध	ध प म ग र स ऩ	इति चित्रा।
५	ध़ ऩ स र ग म प	प म ग र स ऩ ध़	इति चित्रावती।
६	प़ ध़ ऩ स र ग म	म ग र स ऩ ध़ प़	इति सुखा।
७	म़ प़ ध़ ऩ स र ग	ग र स ऩ ध़ प़ म़	इति आलापा।

उक्त मूर्च्छनाओं का अनेक प्रकार विस्तार संगीत शास्त्र में पाया जाता है। षटपञ्चादश (५६) मूर्च्छना में से प्रत्येक मूर्च्छना सात सात प्रकार के होते हैं। उक्त प्रकारों का संगीत शास्त्र में विशेष वर्णन पाया जाता है। यथाः

नन्दा विशाला सुमुखी चित्रा चित्रावती सुखा। आलापश्चेति गान्धार ग्रामस्यु सप्त मूर्च्छना॥
भरत सूत्र, संगीत रत्नाकर, नारद संहिता संगीत समय सार।

'पंचदश मेल और भेद'

१	२	३	४	५
ऋषभभेदः।	गान्धारभेदः।	मध्यभेदः।	धैवतभेदः।	निषादभेदः।
(१) तीव्रः।	(४) साधारणः।	(८) तीव्रतमः।	(१०) तीव्रः।	(१३) कैशिकिः।
(२) तीव्रतरः।	(५) अन्तरः।	(९) मृदुमः।	(११) तीव्रतरः।	(१४) काकलिः।
(३) तीव्रतमः।	(६) मृदुमः।		(१२) तीव्रतमः।	(१५) मृदुसः
	(७) तीव्रतमः।			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निम्नलिखित रागों को गाने के लिये कोई निर्दिष्ट समय नहीं है

धानी—पुरिया।
बसन्त—बाहार।
परज—बाहार।
परज—बसन्त।
भैरव—बाहार।
कलिंगड़ा—बाहार।
भैरवी—बाहार।
योगिया—आशावरी।
टोड़ी—भैरवी।
आड़ाना। बाहार।

सर्वकालीन गेय राग-रागनियाँ

जयपुर महाराजाधिराज का संगीत समय-सार नामक पुस्तक में उल्लिखित है। उक्त रागों को तानसेन मिलाकर अकवर बादशाह को सुनाते थे।

संगीत-समय-सार।
चतुर्थ खण्ड—पृष्ठ—४८८।

वर्णित रागों की अतिरिक्त गुणीयों नव नट एक साथ गाते हैं। जैसे—कामोद नट, मल्लार नट, आहिरी नट, नटकीन्द्र, कदम्ब नट, छाया नट और हाम्बिर नट, केदार नट, एवं "वृहन्नट" या "नटनारायण राग" नटनारायण राग से कल्याणी, हाम्बिरी, केदारी आदि उत्पन्न हुए हैं।

ग्रह स्वर।

कोई राग अथवा रागिनी की प्रारम्भ में जिसमें स्वर रहे उसे ग्रह स्वर कहा जाता है।

न्यास स्वर।

जिस स्वर में रागादि का विश्राम हो उसे न्यास स्वर कहा जावेगा।

वादी स्वर

कोई राग अथवा रागिणी की जिसमें स्वर प्रधान अर्थात् प्राण स्वरूप उसे वादी स्वर (जान) कहलाते हैं। वादी अथवा अंश स्वर को राजा कहलाते हैं राजस्व रूप है। शास्त्र में उल्लिखित है—

स्वामि वद्वदनादी सराग प्रतिपादकः।
वादिना सह संवादात् सम्वादी मन्त्रि तुल्यकः।
मुखे तस्यानुवदनादनुवादी च भृत्यंवत्।
तथा विवादा स्तेनैव बिवादी वैरीद्भवेत्॥

संगीत समय सार, स्वर सागर।

सम्वादी स्वर।

वादी स्वर की अणुगामी स्वर को सम्वादी स्वर कहते हैं। यह मन्त्री तुल्य है।

अणुवादी स्वर।

अवशिष्ट सब स्वरों को अणुवादी स्वर कहलाते हैं। यह भृत्य तुल्य है।

विवादी स्वर

कोई राग अथवा रागिणी में कोई स्वर संयोयित होकर उस सुर द्वारा राग अथवा रागिनी भ्रष्ट हो तो उसे बिवादी स्वर कहा जाता है। यह शत्रु तुल्य है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विकृत स्वर की तान

विकृत स्वर

श्रुति संख्या	शुद्ध स्वर	शारङ्गदेव	रामामात्य	सोमनाथ सप्तस्वरा (प्राचीन)	सोमनाथ अष्ट स्वरा (नवीन)
(१)		कैशिकिनिः	कैशिकिनिः	(१) कैशिकिनिः	(८) तीव्रतमः
(२)		काकलिनिः	काकलिनिः	(२) काकलिनिः	
(३)		च्युतसः	च्युतसः	(३) मृदुशः	
(४)	स	अच्युतसः	-		
(५)					
(६)					
(७)	रे	विकृतरिः			
(८)					(९) तीव्ररिः
(९)	ग				(१०) तीव्रतररिः
(१०)		साधारणगः	साधारणगः	(४) साधारणगः	(११) तीव्रतमरिः
(११)		अन्तरगः	अन्तरगः	(५) अन्तरगः	
(१२)		च्युतमः	च्युतपः	(६) मृदुमः	
(१३)	म	अच्युतमः			
(१४)					(१२) तीव्रतमगः
(१५)		{ विकृतपः			(१३) तीव्रतममः
(१६)		{ कैशिकिपः	च्युतपः	(७) मृदुपः	
(१७)	प				
(१८)					
(१९)					
(२०)	ध	विकृतधः			(१४) तीव्रधः
(२१)					(१५) तीव्रतरधः
(२२)	न				

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग्रंथकार उम्र ५७ वर्ष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः

रागिणी-प्रथम मञ्जरी-चौताल

धैवतांश ग्रहन्यासं क्वचित्मध्यम ईरितः ।
सम्पूर्णा मञ्जरी प्रोक्ता हेमन्तर्तौ प्रगीयते ॥
हिन्दोल पञ्चमा मिश्रा बसन्त स्वर संयुता ।
मञ्जरी जायते विद्वन् प्रातः काले प्रगीयते ॥
(सङ्गीत स्वर सागरे-सङ्गीत समय सारे च)

सम्पूर्णा मञ्जरी ज्ञेया रिध यत्र कोमलौ ।
धैवतांश ग्रहन्यास द्वौ मध्यम ईरितः ॥
(सङ्गीत नारायणे)

गाने का समय प्रातः काल तथा ऋतुराग होने से हेमन्त ऋतु में गाना शास्त्र का निर्देश है। ऋषभ तथा धैवत कोमल, दोनों मध्यमो का प्रयोग हुआ करता है। वादी स्वर धैवत समवादी स्वर गन्धार कहा गया है।

आरोहणावरोहण = ऩि सा, म प, मं प ग, मं प ध़ नि सां ।
सां नि ध़, प मं म, ग रे़ सा ॥
चलन = सा रे़ ग, मं म, प ध़, प मं म ग, रे़ सा ॥

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रागिणी प्रथम मञ्जरी=चौताल

(स्थायी)

×		०		२		०		३		४	
नि़	सा	प	मं	प	प	मं	म	ग		ग	रे॒
ज	य	मा	ऽ	ध	व	मु	कु	ऽ	न्द	मु	रा
रे॒	सा	नि़	ध़॒	प़	प़	म़	नि़	ध़॒	ध़॒	नि़सा	रे॒सा
री	ऽ	ऽ	ऽ	म	धु	ऽ	सू	ऽ	द	ऽऽ	नऽ
सा	प	मं	मंप	मंनि	ध॒	ध॒	प	प	मं	ग	मं
म	द	न		मोऽ	ऽ	ह	न	म	न	रौं	ऽ
मग	रे॒सा	नि़सा		रे॒	ग	रे॒	सा	नि़सा	गरे॒	सानि़	सा
जऽ	नऽ	ऽऽ	ऽऽ	म	न	भा	ऽ	वऽ	नऽ	ऽऽ	ऽ।

(अन्तरा)

×		०		२		०		३		४	
प	मं	प	प	मं	नि	ध॒	ध॒	सां	सां	नि	सां
ज	ग	प	ति	ज	ग	ऽ	श्रा	ऽ	थ	ज	ग
×		०		२		०		३		४	
निनि	सांरें॒	गं	गं	रें॒	सां	रें॒	सां	निसां	रें॒	निनि	सां
जीऽ	वऽ	न	ज	ग	ऽ	ऽ	ऽ	बौंऽ	ऽ	दऽ	न
×		०		२		०		३		४	
नि	सां	सां	रें॒	नि	नि	ध॒	ध॒	प	प	मंध॒	नि
ज	ऽ	ग	पा	ऽ	ऽ	व	न	ऽ	ऽ	जऽ	ग
×		०		२		०		३		४	
नि	ध॒	ध॒नि	सां	नि	ध॒	प	मं	म	ग	रे॒	सा
प्र	ग	ऽऽ	ऽ	टा	ऽ	ऽ	ऽ	व	न	ऽ	ऽ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(सञ्चारी)

×		०		२		०		३		४	
सा	प	प	म॑नि	ध	ध	सा	सा	सा	रे	ग	ग
कु	ऽ	ब्या	ऽऽ	के	ऽ	श	व	क	रु	णा	ऽ
म॑	नि	ध	प	प	म॑	ग	म॑	नि	ध	प	प
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	थ	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	ग	ग	रे	रे	सा	सा	नि	ध	प	प
कँ	ऽ	सा	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	कँ	ऽ	स	ऽ
पम॑	निध	प	प	म॑	नि	ध	सा	रे	रे	सा	सा
काऽ	ऽऽ	ल	ऽ	का	ऽ	ली	ऽ	ना	ऽ	ग	ऽ
सा	प	म	प	म॑	प	गम॑	प	म	नि	ध	सां
ना	ऽ	श	न	को	ऽ	ऽऽ	भ	ज	ऽ	ऽ	ऽ
म	ध	नि	नि	ध	प	म	प	म	ग	रे	सा
लो	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ

(आभोग)

×		०		२		०		३		४	
नि	सा	रे	रे	नि	ध	ध	प	प	प	म	ध
वै	ऽ	कु	ण्ठ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	थ	वि	हा	ऽ
नि	सा	सा	प	म॑	नि	ध	सां	नि	सारें	नि	नि
री	ऽ	ब	द	री	ऽ	ऽ	ऽ	बा	ऽऽ	म	न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

×		०		२		०		३		४	
सां	रें	नि	नि	धु	धु	प	मं	मंधु	नि	सां	रें
वि	ष्णु	ऽ	व	ऽ	ल्ल	भ	व	राह	वि	ठ	ल
गं	रें	सां	गं	गं	रें	गं	रें	रें	निनि	सांनि	धुप
ऽ	ऽ	ऽ	बै	ऽ	जू	ऽ	बा	ऽ	वऽ	रेंऽ	ऽऽ
म	मं	ग	ग	रे	रे	सा	सा	रें	गं	रें	सां
के	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प्रा	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
रें	रें	सां	सां	निनि	धु	धु	पमं	म	म	गग	रेंसां
जि	ऽ	ऽ	ऽ	याऽ	ऽ	ऽ	वऽ	ऽ	ऽ	नऽ	ऽऽ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

प्रथम मञ्जरी = धमार ॥

(स्थायी)

×			०		२		०			३			
म	ग	रे॒	सा	सा	नि़	सा	सा	रे॒	ग	म॑	पप	म॑	म
हो	री	ऽ	खे	ऽ	ल	त	न	ऽ	न्द	ला	ऽल	री.	ऽ
प	म॑	म॑	म॑	नि	ध॒	नि	ध॒	प	प	म॑	म॑	म	म
भा	नु	ऽ	सु	ता	के	ऽ	स	ऽ	ङ्ग	लि	ये	ऽ	ऽ
ग	रे॒	सा	रे॒	ग	म॑	नि	ध॒नि	ध॒	प	म॑	म	ग	म
स	ऽ	ब	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सऽ	खी	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ।

(अन्तरा)

×			०		२		०			३			
म॑	प	म॑	नि	नि	ध॒	ध॒	सां	सां	सां	नि	ध॒प	म॑	म
कु	म	ऽ	कु	ऽ	म	ऽ	अ	बी	र	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
म॑	प	ध॒	नि	ध॒	प	प	म॑	नि	ध॒	प	म॑	म॑ग	रे॒सा
र	ङ्ग	ऽ	पि	ऽ	च	ऽ	का	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽऽ	ऽऽ
सां	रें॒	गं	म॑ं	म	गंरें॒	सा	नि	ध॒	प	म॑	म	ग	म
औ	र	ऽ	लि	ये	ऽऽ	ऽ	च	न्द	न	री	ऽ	ऽ	ऽ॥

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रागिणी गुर्जरी

श्यामा सुकेशी मलयद्रुमाणाम्,
मृदुल्लसत्पल्लव तल्प मध्ये ।
श्रुतिस्वराणाम् दधती विभागम,
तन्त्रीमुखी दक्षिण गुर्जरीयम् ।।
(सङ्गीत दर्पणे)

धैवतांश ग्रहन्यासं षाढ़वा गुर्जरी मता ।
सप्तमी मूर्च्छना तस्या बहुल्या सह मिश्रिता ।।
(नाद विन्दु—सङ्गीत दर्पणे च)

रामक्री टोड़ी संयुक्ता बराटी मिश्रिता पुनः ।
गुर्जरी जायते विद्वन् आद्य यामे प्रगीयते ।।
(नादविन्दु-सङ्गीत दर्पणे च)

ऋषभ गन्धार धैवत कोमल दोनों मध्यम लगाये जाते हैं । षाढ़व जाति, धैवत वादी स्वर तथा ऋषभ समवादि स्वर कहा जाता है । तीव्र मध्यम का प्रयोग अधिक तथा कोमल मध्यम का क्वचित्प्रयोग होता है। पञ्चम वर्ज्य स्वर है ।

प्रवाद है कि ग्वालियर के महाराजाधिराज मान की महिषी ने इसका प्रणयन किया । गुर्जरी चार प्रकार की मानी गई है । इसे तोड़ी का अङ्ग मान लिया गया है ।

आरोहणावरोहण—

नि़ सा मं ग मं ध निसां ।
नि ध मं ग रे सा — —।।

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रागिणी दक्षिण गुर्जरी = चौताल

(स्थायी)

×		०		२		०		३		४	
सां	नि	ध॒	ध॒	ध॒	म॑	ध॒	म॑	ग॒	ग॒	रे॒	सा
ना	ऽ	द	म	न्दि	र	व	ना	ऽ	ऽ	ओ	ऽ
सा	नि़	ग॒	ग॒	रे॒	सा	नि़	रे॒	रे॒	सा	नि़	ध़॒
अ	द	भु	ऽ	ऽ	त	अ	नू	ऽ	प	र	ष
ध़॒	ध़॒	सा	सा	रे॒	सा	नि़	सा	सा	सा	रे॒	सा
प	च्च	क	र	वि	चा	ऽ	र	स	ब	हूँ	ऽ
(मध॒)	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	नि	ध॒	नि	नि	ध॒	नि	सां
(आऽ)	स	त	ब	हु	प्र	का	ऽ	र	त्र	है	ऽ
सां	सां	सां	सां	सां	(निसां)	ध॒	ध॒	म॑	म॑	म॑	म॑
दे		व	मि	ल	(ताऽ)	ऽ	ऽ	म	ऽ	ध्य	ऽ
म॑	ध॒	नि	(ध॒म॑)	म	ध॒	ध॒	नि	नि	ध॒	म॑	(ग॒ग॒)
ब	ऽ	न	(चाऽ)	स	को	ऽ	टि	ऽ	ता	ऽ	(नऽ)
ग॒	म॑	म॑	नि	ध॒	ध॒	(म॑ध॒)	ग॒	ग॒	रे॒	सा	सा
अ	त्त	र	ऽ	स्था	ऽ	(नऽ)	पा	ऽ	ऽ	ओ	ऽ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अन्तरा)

×		०		२		०		३		४	
ध	धध	नि	निनि	ध	नि	ध	सां	सां	सां	सां	सां
स	मृऽ	सु	रऽ	शि	ऽ	ड़ी	ऽ	ती	ऽ	न	ऽ
सां	सां	रें	नि	सां	सां	सां	सां	नि	ध	ध	सां
प्रा	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ	ख	न्	ड	की	न्हे	ऽ
सां	सां	नि	रें	सां	सां	सां	सां	गं	गं	रें	सांसां
सु	र	छ	ना	ऽ	ऽ	झ	र	खे	ऽ	रा	खेऽ
सां	नि	ध	ध	मंमं	मं	मं	मं	नि	ध	ध	मं
दु	र	न	ऽ	मुऽ	र	न	ता	ऽ	क	वि	न्दी
मं	ग	ग	ग	मं	मंग	मं	ध	ग	ध	मं	गग
सु	र	त	सा	ऽ	रऽ	वा	ऽ	न	आ	ऽ	गेऽ
ग	ग	मं	मं	ग	रे	सा	सा	ध	नि	ध	ध
ज्ञा	ऽ	न	ऽ	ख	भ	अ	ऽ	च	ऽ	ल	ऽ
सां	सां	नि	ध	मं	ध	ध	मं	ग	ग	रे	सा
अ	स	ख	ल	क	र	ज	मा	ऽ	य	ऽ	ऽ||

(सञ्चारी)

×		०		२		०		३		४	
सा	सा	सा	धध	ध	ध	ध	नि	ध	ध	मं	मंग
ओ	ढ़	व	खाऽ	ढ़	व	स	स्पू	ऽ	र	ऽ	गाऽ
मं	नि	ध	ध	ध	सां	सां	सां	निध	ध	धध	मं
पु	सू	ति	वा	ऽ	न	रं	ग	ऽऽ	त	अस्त	र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

×		०		२		०		३		४	
ध	ध	ध	ध	नि	ध	मं	मं	मं	ग	मं	गग
का	ऽ	रि	ता	ऽ	न	ऽ	ग	र	द	ऽ	ऽश
×		०		२		०		३		४	
रें	रें	सा	नि़	ध़	ध़	रें	रें	सा	सा	सा	सा
हा	ऽ	त	सु	ऽ	इ	ता	ऽ	ल	शु	भ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
सां	सां	ध	नि	ध	ध	गं	मं	ध	ध	मं	मं
द	र	ऽ	वा	ऽ	ज	न	ऽ	ला	ऽ	ओ	ऽ

(अभोग)

×		०		२		०		३		४	
ध	मं	ध	नि	ध	ध	सां	सां	सां	सां	सांनि	रेंसां
उ	ग	त	ऽ	जु	ग	त	को	म	ल	कुज	सऽ
×		०		२		०		३		४	
नि	सां	सां	गं	रें	नि	सां	सां	सां	रें	रें	सां
अ	व	की	ऽ	ज	न	जी	ऽ	र	ला	ऽ	गी
×		०		२		०		३		४	
सां	नि	ध	ध	सां	नि	ध	मं	ध	ध	मं	मं
ला	ऽ	ग	जा	ऽ	ट	चौ	ऽ	ऽ	ऽ	की	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ध	ध	मं	ध	ध	धनि	नि	नि	ध	धध	मं	धमं
दा	ऽ	र	क	राठ	ऽऽ	रा	ऽ	ग	गाऽ	ऽ	जऽ
×		०		२		०		३		४	
गमं	गरें	सा	ध	ध	मं	ग	मं	ध	सां	नि	रें
राऽ	ऽऽ	ज	क	र	त	रा	ऽ	गि	णी	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
रें	रें	नि	सां	सां	नि	सां	गं	रें	सां	रेंरें	निसां
प	ट	रा	नी	उ	प	रा	ऽ	ग	ख	भऽ	सऽ

२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

× नि	ध॒	० सां	ग॒ं	२ रे॒ं	ग॒ं	० रे॒ं	रे॒ं	३ नि	रे॒ं	४ सां	सां
आ	ऽ	स	पा	ऽ	स	मू	ऽ	र	छ	ना	ऽ
× नि	ध॒	० ध॒	ध॒	२ म॑	ग॒	० म॑	ग॒	३ ग॒	रे॒	४ सा	सा
प	ह्	खा	ऽ	ऽ	हि	ला	ऽ	व	ऽ	त	ऽ
× सां	सां	० नि	ध॒	२ ध॒	म॑	० ग॒	ग॒	३ ग॒	म॑	४ ध॒	ध॒
रा	ऽ	ग	रू	ऽ	प	र	ह्	ऽ	ग	को	ऽ
× नि	ध॒	० नि	सां	२ रे॒ं	सां	० सां	ध॒	३ ध॒	सां	४ रे॒ं	सां
स	मा	ज	सा	ऽ	ज	सु	घ	र	ऽ	ऽ	ऽ
× ग॒ं	ग॒ं	० रे॒ं	रे॒ं	२ रे॒ं	सां	० सां	नि	३ ध॒	ध॒	४ ध॒	म॑
धु	र	ऽ	प	ऽ	द	ता	ऽ	न	से	ऽ	न
× ध॒	ध॒	० म॑	ग॒	२ ग॒	ग॒	० रे॒	ग॒	३ म॑	ग॒	४ रे॒	सा
गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ।

—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुर्जरी-धमार

(स्थायी)

×			०		२		०			३			
सांसां	सां	सां	ध॒	ध॒	ग॒म॑ग॒रे॒	सा	ध॒ध॒	म॑	ग॒	म॑	निध॒	सांसां	सांसां
डोऽ	ले	ऽ	ब्र	ज	ऽऽऽऽ	ऽ	मोऽ	ह	न	हो	रीऽ	खेऽ	लत
×					२		०			३			
ग॒ग॒	म॑	ध॒	सासां	सां	सां	सांसां	ध॒म॑	निध॒	ग॒म॑	ग॒ग॒	म॑ग॒	ग॒रे॒	सा
पिऽ	च	ऽ	काऽ	ऽ	री	कर	लिऽ	ऽऽ	ऽऽ	येऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ।

(अन्तरा)

×				०	२		०			३			
ध॒	म॑	ग॒	म॑ध॒	नि	सां	सां	सां	गं	रें	नि	सां	नि	ध॒
अ	ग	र	वऽ	ग	र	को	ढूँ	ढ़	त	तो	ऽ	को	ऽ
×			०		२		०			३			
नि	सां	सां	गंगं	गंगं	रेंनि	ध॒	नि	म॑	ध॒	ग॒म॑	ग॒रे॒	ग॒रे॒	सा
उ	ठ	ऽ	चलो	रीऽ	हऽ	र	लि	ऽ	ऽ	येऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ।।

—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री टङ्की

श्री टङ्की रागश्च कथितः पूर्वां मेल समुद्भवः।
सम्पूर्णः पञ्चमांशश्च समवादि ऋषभः स्वरः॥
तीव्रा निषाद गन्धार मध्यमा धैवतर्षभौ।
कोमलौ कथितावत्र सायं काले च गीयते॥
कैश्चिन्मध्यम वर्ज्यश्च वर्णितोऽयं त्रिवेणिवत्।
वादि भेदाद्राग भेद इति युक्त तदप्युत॥
(सङ्गीत सुधाकरे पृ० ३६-३७)

कोमल धैवत रिखभ हैं मध्यम सुर न लगाई।
परि वादि सम्वादि तें टङ्की गुणि जन गाई॥
राग चन्द्रिका सारे॥ ५७॥

श्री टङ्की पूर्वी मेल से उत्पन्न हुई है। ऋषभ, धैवत कोमल स्वर, तीव्र मध्यम, (मध्यम नहीं लगाने वाले मत वाले भी हैं) परन्तु मध्यम लगाने वाले तीव्र ही लगाते हैं। त्रिवेणी से कुछ मिलता जुलता है। सन्ध्या समय गाया जाता है। केवल वादि और सम्वादि के परिवर्त्तन से राग रूप बदल जाता है। पञ्चम वादि तथा ऋषभ सम्वादि स्वर माना जाता है।

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीटङ्की = धमार

(स्थायी)

		०	३
		रे रे रे	ग रे ग प
		मा ऽ ऽ	ल ऽ न ऽ
× ०	२	०	३
प प प धुप निसां	नि धु प	रे रे सा	नि ध प प
आऽ ऽ ऽऽ ऽ ऽ	ये ऽ ऽ	ब स न्त	दि न में ऽ
× ०	२	०	३
ध प नि सा सा	नि रे सा	ग रे प	ध प नि सां
हो री ऽ खे ल	न ऽ को	ग्वा ऽ ल	बा ल लि ये
× ०	२		
निध प मंग धुप	ग रे सा		
सं ऽ ऽ ऽऽ ऽऽ	ग ऽ ऽ।		

(अन्तरा)

× ०	२	०	३
प प प धु प	नि नि	सां रें गं	रें नि सां –
अ बी ऽ र ऽ	गु ऽ	ला ऽ ऽ	ऽ ला ऽ ऽ
× ०	२	०	३
प मं ग रे रे	सा सा	रे ग प	नि ध प प
के ऽ ऽ स ऽ	र ऽ	पि च ऽ	का ऽ री ऽ
× ०	२	०	३
नि सां रें गं गं	रें सां	नि रें सा	ध प धनि धप
बा ऽ ऽ ज ऽ	ऽ ऽ	त ऽ ऽ।।	ड ऽ फऽ ऽऽ
× ०	२		
म ग रे रे प	ध प		
मृ दँ ऽ ऽ ऽ	ग ऽ।।		

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धवलश्री

(ध्यानम्)

स्वकान्त सञ्चुम्बिता वक्त्र पद्मा,
शुक द्युतिः कुण्डलिनी प्रमत्ता।
सङ्केत शालां विशति प्रदोषे,
माला धारिणि धवलि केय मुक्ता॥

मध्यमांश ग्रहन्यासं ग प वर्जितौड़वा।
तृतीय दिवसे यामे गीयते विबुधैर्जनैः॥
(सङ्गीत पारिजत)

मस्तु तीव्र तरो प्रोक्तो रिध तु कोमलौ मतः।
श्री रागस्य प्रिया इमा धवला कथितौ बुधैः॥
(सङ्गीतार्णवे)

कोमल रिषभ धैवत यामे प ग न लगाई।
म स वादि सम्बादितें गुणि जन धवला गाई॥
(राग चन्द्रिका सार)

धवलश्री में गन्धार (ग) तथा पञ्चम (प) वर्ज्य, ऋषभ (रे) धैवत (ध) कोमल मध्यम (म) दोनों, औड़व जाति, वादि स्वर मध्यम तथा सम्वादि स्वर षड़ज माना जाता है। शास्त्र में अति तीव्र मध्यम का प्रयोग निर्दिष्ट रहने पर भी गीतों में दोनों मध्यम का ही प्रयोग किया जाता है। पूर्वी मेल से उत्पन्न हुआ है, दिवस के तृतीय प्रहर में गाया जाना है।

आरोहणावरोहण—

नि़ सा रे़, मं ध़ नि सां।
सां नि ध़ म रे़, सा—॥

धवलश्री दो प्रकार के होते हैं। (१) षाड़व सम्पूर्ण, और (२) औड़व जाति।

षाड़व सम्पूर्ण—आरोही सा, ग, म, रे़, गा, प, नी, सां,
अवरोही सां, नी, ध, प, मं, रे़, सा, ग, रे, सा

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धवलश्री = चौताल

(स्थायी)

								३		४	
								सा	सा	रे॒	रे॒
								ज	य	ति	ऽ
×		०		२		०		३		४	
म॑	म॑	म॑	म	म॑	म॑	रे॒	रे॒	सा	सा	सा	सा
ज	थ	ज	थ	ज	ग	बौ	न्	ऽ	द	न	ऽ
×		०		२		०		३		४	
रे॒	रे॒	रे॒	रे॒	सा	सा	नि़	नि़	ध़	ध़	नि़	सा
रा	ऽ	धा	र	म	ण	म	व	भ	य	हा	रि
×		०		२		०		३		४	
सा	सा	म	म	म॑	म॑	ध॒	ध॒	ध॒	नि	सां	सां
वा	ऽ	सु	दे	ऽ	व	दे	व	की	ऽ	सु	त
×		०		२		०					
नि	नि	ध॒	म॑म	रे॒	रे॒	सा	सा				
न	ट	ऽ	ऽ	वे	ऽ	ऽ	श				

(अन्तरा)

×		०		२		०		३		४	
म	ध॒	नि	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	सां	सां
गो	पी	व	ल्ल	भ	म	थु	रे	ऽ	श्व	र	ऽ
×		०		२		०		३		४	
सां	रें॒	मं	मं	मं	रें॒	रें॒	रें॒	सां	सां	सां	सां
या	ऽ	द	ऽ	व	यो	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ	श

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

×		०		२		०		३		४	
सां	सां	सां	ध॒	नि	सां	नि	नि	नि	ध॒	ध॒	ध॒
य	मु	ना	ज	ऽ	ल	वि	हा	ऽ	ऽ	री	ऽ
म॑	म॑	म	म	रे॒	रे॒	सा	सा	सा	सा	रे॒	रे॒
हृ	षी	के	ऽ	ऽ	ऽ	श	ऽ	ज	य	ति	ऽ

(सञ्चारी)

×		०		२		०		३		४	
रे॒	रे॒	रे॒	सा	सा	सा	सा	ध़	ध़	सा	सा	सा
मू	ऽ	र	शा	स	न	कँ	शा	ऽ	हा	ऽ	री
सा	म	म	म॑	म	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	म॑	म	म
के	शि	म	थ	न	का	लि	य	द	म	न	ऽ
रे॒	सा	सा	सा	नि़	नि़	नि़	नि़	ध़	ध़	ध़	ध़
शं	ख	च	क्र	ग	दा	ऽ	प	ऽ	द्म	ऽ	ऽ
ध़	ध़	नि़ रे॒	सा	सा	सा	सा	रे॒	म॑	म॑	म	म
क	र	मु ऽ	र	लि	अ	ध	र	ऽ	वा	ऽ	रि

(आभोग)

×		०		२		०		३		४	
ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
ता	ऽ	न	ऽ	से	ऽ	न	के	ऽ	प्र	भु	ऽ
रें॒	रें॒	रें॒	रें॒	मं	मं	रें॒	रें॒	सां	रे॒	सां	सां
भ	क्त	व	ऽ	त्	स	ल	द	या	ऽ	नि	धि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

×		०		२		०		३		४	
नि	ध	नि	सां	सां	सां	सां	ध	नि	नि	ध	म
की	ऽ	जे	ऽ	कृ	पा	ऽ	रा	धा	ऽ	वि	ला
×		०		२		०		३		४	
रे	रे	सा	सा	रे	म	रे	सा	सा	सा	रे	रे
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य	ति	ऽ।

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धवलश्री = धमार

(स्थायी)

							०			३			
							सा	नि़	सा	सा	रे	रे	रे
							हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ
×			०		२		०			३			
म	मं	मं	नि	ध	मरे	सा	रे	रे	रे	म	मं	ध	ध
खे	ऽ	ऽ	ल	न	देऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			०		२								
नि	मं	ध	म	रे	रे	सा							
न	ऽ	न	दि	या	ऽ	ऽ।।							

(अन्तरा)

×			०		२		०			३			
म	म	मं	म	ध	ध	नि	सां	सां	सां	रें	रें	सां	सां
ज्यों	ऽ	ज्यों	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	क	ऽ	है	ऽ	ऽ	गी	ऽ
×			०		२		०			३			
रें	रें	रें	मं	मं	रें	रें	सां	ध	नि	रें	रें	सां	सां
×			०		२		०			३			
सो	ऽ	हि	सो	ऽ	ऽ	हि	क	ऽ	रूँ	ऽ	ऽ	गी	ऽ
×			०		२		०			३			
नि	ध	मं	ध	नि	रें	रें	मं	रें	सां	नि	रें	सां	सां
फा	ऽ	गु	न	ऽ	में	ऽ	य	ऽ	ऽ	श	ऽ	ऽ	ऽ
×			०		२		०			३			
नि	ध	ध	मं	म	रे	सा	सा	नि़	सा	सा	रे	रे	रे
ले	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

योगिनी

(ध्यानम्)

काली कराली शुभमंकरीच कंगाली खनित्र त्रिशूल धारिणी ।
संग्राम भूमौ सपिवन्ति रक्तम् रक्ताम्बर धारिणि योगिनीयम् ।।

(सङ्गीत दर्पणे नारायणे च)

धैवतांश ग्रहन्यास: सावरी देशी जन्मभू: । अथाह्निके यामे गानम् क्रीयते योगिनीरियम् ।।

इस रागिणी में ऋषभ तथा धैवत स्वर कोमल, दो मध्यमो का प्रयोग किया जाता है । धैवत वादि तथा गन्धार सम्वादि माना जाता है । सावेरी और देशी के संमिश्रण से बनती है । ऐसा शास्त्र का विचार है; परन्तु इसमें ऋषभ कोमल लगने से देशी से इसका कोई सम्बन्ध नहीं दिखलाई पड़ता है, हो सकता है कि कालक्रम से परिवर्त्तनशील जगत् के प्रमाणानुसार यह रागिणी भी शास्त्र मत का उल्लङ्घन की हो ।

योगिनी

आरोहणावरोहण = सा रे॒ ग म प ध॒ सां— । नि ध॒ मं ग म रे॒ सा— ।।

पकड़ = ध॒ नि॒ सा रे॒ ग म, प ध॒ मं म ग, म रे॒ सा— ।।

योगिनी = चौताल

(मध्यलय)

(स्थायी)

३		४		×		०		२		०	
सा	रे॒	गम	पध॒	ध॒	ध॒	निध॒	म	प	मंम	रे॒	सा
शि	व	शऽ	क्तिऽ	आ	ऽ	नऽ	न्दी	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
३		४		×		०		२		०	
ध॒	ध॒	ध॒	नि॒सा	रे॒	ग	ग	ग	म	पध॒	म	म
आ	ऽ	दि	भऽ	वा	ऽ	नी	ऽ	द	याऽ	नी	ऽ
३		४		×		०		२		०	
प	ध॒	मं	म	ग	म	रे॒	रे॒	सा	धंध॒	नि॒	सा
द	या	ऽ	ऽ	ऽ	क	ऽ	र	ऽ	दीऽ	जे	ऽ
३		४		×		०		२		०	
सा	रे॒	गम	ग	म	म	ध॒	ध॒	प	मं	म	ग
द	र	ऽऽ	श	इ	ऽ	न	ऽ	न	य	न	न
३		४		×		०		२		०	
ग	ध॒	ध॒	म	प	प	ध॒	सां	ध॒प	मंम	गम	रेसा
दा	ऽ	रि	ऽ	द्रव्य	ऽ	ऽ	ऽ	दऽ	लऽ	नीऽ	ऽऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अन्तरा)

×		०		२		०		३		४	
प	ध॒	ध॒	सां	सां	सां	रें॒	सां	नि	सां	ध॒नि	सां
ती	ऽ	नो	ऽ	लो	ऽ	क	में	जा	ऽ	नीऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
सा	रे॒	ग	म	ग	ग	म	प	ध॒	सां	सांनि	ध॒ध॒
मृ	ऽ	ड़ा	ऽ	नी	ऽ	ऐ	ऽ	सो	ऽ	प्रसा	ऽदु
×		०		२		०		३		४	
सां	रें॒	गं	मं	गं	मं	रें॒	सां	ध॒प	म॑म	गग	ग
की	ऽ	जे	ऽ	दु	ख	द्व	न्द	दूऽ	रऽ	होऽ	य
×		०		२		०		३		४	
ध॒	ध॒	नि	ध॒	सां	सां	रें॒	सां	नि	नि	ध॒म	म
सु	ख	ऽ	ऽ	श	री	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ध॒	नि	सां	नि	ध॒	ग	म	म	प	म॑म	गम	रेसा
आ	ऽ	न	न्द	द	क	ऽ	ऽ	र	ऽऽ	नीऽ	ऽऽ

(सञ्चारी)

×		०		२		०		३		४	
सा	ध़॒	ध़॒	प़	ध़॒	ध़॒	नि़	सा	रे॒	ग	मरे॒	सा
म	हा	ऽ	मा	ऽ	या	भ	द्र	का	ऽ	लीऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
रे॒	ग	ग	म	प	ध॒	नि	ध॒	प	म॑	म	ग
क	ल्या	ऽ	णी	ऽ	शि	वा	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
म	रें॒	रें॒	सा	नि़	ध़॒	म़॑	म़	प़	ध़॒	सा	सा
म	ना	ऽ	त्म	जा	ऽ	दु	ख	ह	र	णी	ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अभोग)

× सां	सां	० ध॒	सां	२ रें॒	रें॒	० सां	सां	३ सारें॒	गं	४ मंरें॒	सां
च	ऽ	राऽ	मू	ऽ	राऽ	ऽ	ऽ	महि	पा	सुऽ	र
× सां	सां	० रें॒रें॒	सां	२ रें॒	रें॒	० सां	ध॒	३ मं	म	४ प	प
म	दिं	नीऽ	ऽ	त्रि	ऽ	लो	ऽ	क	रा	नी	ऽ
× ध॒	ध॒	० सां	रें॒	२ गं	गं	० रें॒	सा	३ सां	रें॒	४ सां	सां
ता	ऽ	न	से	ऽ	न	से	ऽ	व	क	के	ऽ
× रें॒	गं	० मंरें॒	सां	२ ध॒	नि	० ध॒	सां	३ नि	ध॒	४ मं	म
सु	ऽ	खऽ	ऽ	क	र	ऽ	नि	मा	ऽ	ता	ऽ
× प	ध॒	० नि	ध॒	२ सां	रें॒	० गंमं	रेंसां	३ नि	ध॒	४ सां	ध॒
तू	ऽ	ही	ऽ	ज	ग	ऽऽ	तऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
× मं	म	० पध॒	सां	२ नि	ध॒	० मं	म	३ ग	ग	४ मरे॒	सा
यो	ऽ	षऽ	गा	भ	र	ऽ	ऽ	नी	ऽ	ऽऽ	ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

योगिनी=धमार

(स्थायी)

×					२		०			३			
							सां	नि़	ध़	सा	रे	गम	प
							तू	म	त	छे	ऽ	ड़ोऽ	ऽ
ध	ध	ध	निध	-प	मंग	मरे	सा	रे	ग	म	मं	प	ध
काँ	ऽ	ऽ	धाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	जा	ने	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ
सां	नि	सां	धनि	धप	ममगमरे	सा	रे		म	म	प	मंग	मरे
म	थु	रा	ऽऽ	नऽ	गऽऽऽऽ	रि	या	ऽ	ऽ	प्या	ऽ	रेऽ	ऽऽ
ग	मप	धप	मग	मरे	सा	सा							
मो	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	हे	ऽ।							

(अन्तरा)

×					२		०			३			
प	ध	ध	सांनि	सां	रें	सां	सां	नि	ध	मंप	मंमग	मंग	म
अ	बी	र	गुऽ	ला	ऽ	ल	र	ऽ	ङ्ग	नऽ	डाऽऽ	रोऽ	ऽ
पं	मं	मंगं	मंरें	सां	सां	सां	नि	ध	प	मं म ग		म रे सा	
भि	ग	ऽऽ	गऽ	ई	मो	री	अँ	गि	या	ऽ ऽ ऽ		ऽ ऽ ऽ	

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सुरालय

गौरी मेल समुद्भूतो धैवत स्वर वर्जितः। आरोहे रिहीनः स्यान्निषादादि सुरालयः ॥

(सङ्गीत पारिजात)

इस राग में ऋषभ कोमल स्वर, मध्यम तीव्र स्वर, धैवत वर्जित स्वर, निषाद वादि स्वर, गन्धार सम्वादी स्वर माना गया है।

अरोहणावरोहण— नि़ सा ग मं प नि सां –।
नि – प मं ग रे़ सा – ॥

सुरालय-चौताल

(स्थायी)

×		०		२		०		३		४	
नि़	नि़	सा	ग	प	मं	ग	ग	मं	ग	रे़	सा
धी	ऽ	री	ऽ	धू	ऽ	म	र	प	य	ग	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि़	नि़	प़	प़	सा	सा	नि़	नि़	सा	ग	मं	ग
का	ऽ	ज	र	क	ऽ	हे	ऽ	क	ऽ	हे	ऽ
×		०		२		०		३		४	
मं	प	सां	नि	निनि	पप	मंप	मंग	ग	ग	रे़	सा
टे	ऽ	ऽ	ऽ	रेऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ।

(अन्तरा)

×		०		२		०		३		४	
प	पमं	ग	प	सां	सां	सां	सां	सां	गंरें	सां	सां
मो	ऽऽ	र	सु	कु	ऽ	ट	ऽ	शी	ऽ	श	ऽ
×		०		२		०		३		४	
गं	गं	गं	मं	पं	मं	गं	रें	सां	सां	सां	सां
अ	ऽ	व	ऽ	या	कु	ऽ	ण्ड	ऽ	ऽ	ल	ऽ
×		०		२		०		३		४	
गं	गं	रें	सां	सां	सां	सां	सां	प	प	सां	गंरें
क	टि	में	ऽ	पी	ऽ	ता	ऽ	म्ब	ऽ	ऽ	र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

×		०		२		०		३		४	
नि	नि	प	मं	ग	मं	पमं	ग	मं	ग	मंग	रेसा
प	ऽ	ऽ	हि	रे	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ।

(सञ्चारी)

×		०		२		०		३		४	
नि़	नि़	सा	सा	सा	सा	गमं	पमं	ग	रे	सा	–
ग्वा	ऽ	ल	बा	ऽ	ल	सऽ	ऽऽ	ख्वा	ऽ	ऽ	ऽ
नि़	नि़	नि़	प़	प़	प़	नि़	नि़	सा	सा	सा	सा
म	ण्ड	ऽ	ऽ	ल	ऽ	में	ऽ	आ	ऽ	व	त
ग	ग	ग	मंग	मं	प	गमं	प	गमं	ग	रे	सा
भ	ऽ	ज	ऽऽ	ले	ऽ	ऽऽ	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ

(आभोग)

×		०		२		०		३		४	
प	प	मंमं	प	सां	सां	नि	प	सां	सां	गरे	सा
ता	ऽ	नऽ	ऽ	से	ऽ	न	ऽ	प्र	ऽ	भू	ऽ
नि	नि	सां	सां	गं	गं	मं	गं	पंमं	गं	गंरें	सां
मु	ऽ	ख	ऽ	र	ज	लि	प	टाऽ	नी	ऽऽ	ऽ
सां	सां	नि	सां	गं	गं	रें	सां	नि	प	सां	सां
य	ऽ	शु	ऽ	म	ऽ	ती	ऽ	नि	र	ख	ऽ
नि	नि	पमं	ग	प	मं	पं	प	गमं	ग	मंग	रेसा
मु	ऽ	खऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुरालय=धमार

(स्थायी)

×			०		२		०			३			
ग	ग	ग	म॑	म॑	प	प	म॑	ग	ग	रे॒	रे॒	सा	–
खे	ऽ	ऽ	ल	ऽ	त	ऽ	हो	ऽ	रि	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×					२		०			३			
नि़	नि़	नि़	प़	प़	सा	सा	ग	म॑	ग	म॑	प	सां	सां
यो	ऽ	व	ऽ	न	ऽ	ऽ	म	ऽ	द	ऽ	मा	ऽ	ती
×			०		२		०			३			
नि	प	म॑	ग	प	पम॑	पप	म॑प	ग	म॑	प	म॑	गरे॒	सा
सं	ग	ऽ	लि	ये	नँऽ	ऽऽ	दऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ल

(अन्तरा)

×			०		२		०			३			
म॑	प	प	नि	नि	सां	सां	सां	प	सां	सां	नि	सां	सां
ला	ऽ	ल	पि	च	का	ऽ	गी	ऽ	ऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ
×			०		२		०			३			
गं	गं	गं	मं॑	मं॑	गं	गं	रें॒	रें॒	सां	प	म॑प	सां	सां
बूँ	ऽ	द	ऽ	न	ऽ	ऽ	सों	ऽ	ऽ	कुँ	ऽऽ	ज	न
×			०		२		०			३			
गं	गंमं॑	पं	मं॑	गं	गं	गं	रें॒	रें॒	सां	सां	नि	प	प
द्रु	ऽऽ	ऽ	म	ऽ	न	ऽ	स	ऽ	ऽ	ब	ऽ	ऽ	ऽ
×			०		२		०			३			
प	म॑	ग	ग	म॑प	सां	नि	प	म॑	ग	ग	रे॒	सा	सा
भ	ऽ	ऽ	ई	ऽऽ	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बड़हंसी

(ध्यान)

अति चतुर सुगौरा पीतवर्णाय ताच्चो
दृढ़तर कृत वेणी सेविता कल्प वृन्दैः ।
अति चतुर सुगम्या बड़हंसीति प्रोक्ता
मुनिमत सकलोक्य कीर्त्तिता रागिणीयम् ॥
सारङ्ग स्वर मेघश्च कामदो मिश्रितः पुनः ।
बड़हंसी हंस युक्ता मध्याह्ने गीयते बुधैः ॥

सारङ्ग, मेघ कामोद के मिलावट से बड़हंस की रूपरेखा बनती है, ऐसा उपरोक्त शास्त्र का मत है, दिन में तृतीय प्रहर में गाने का समय भी निर्दिष्ट है। परन्तु राग रूप का निर्णय शास्त्र मत से करने पर वर्त्तमान काल का बड़हंस बिल्कुल दूसरा ही राग प्रतीत होगा। ऐसी अवस्था में गुणियों के विचार से ही राग रूप सिद्ध हो सकता है। कभी कभी धैवत स्वर "धा" लगता है।

आरोहणावरोहण = सा रे ग, म प, निसां।
सां नि़ प म ग म रे सा ॥ ध प ग, म रे, स।

बड़हंसी = सुरफाँकताल

(स्थायी)

×		०		२		३		०	
सा	रेग	सा	नि़	प		म	म	प	धप
प्र	थऽ	म	रा	ऽ	ग	बो	ऽ	ऽ	ल
ग	म	प़	प	नि़	प	नि़	प़	म	रे
ग	म	क	ऽ	अ	ऽ	च्च	र	क्रि	या
ग	ग	म	म	रे	ग	रे	सा	गरे	सा
मा	ऽ	त्रा	ऽ	ल	घु	गु	रु	सीऽ	खे
रे	ग	ग	म	प	प	म	म	रे	सा
त	व	ऽ	गु	णी	ऽ	क	हा	ऽ	वे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अन्तरा)

×		०		२		३		०	
म	प	सां	निसां	रें	गं	गं	मं	रें	सां
स	प्त	सु	रऽ	ती	ऽ	न	ग्रा	ऽ	म
×		०		२		३		०	
सां	रेंसां	नि॒	प	ग	म	धप	प	नि॒	मप
ए	ऽक	इ	स	मु	र	छ	ना	ऽ	ऽऽ
×		०		२		३		०	
म	म	रे	रेसा	सा	सा	नि़	नि़	प़	प़
चा	इ	ऽ	स	श्रु	ति	ले	वे	औ	र
×		०		२		३		०	
सा	रे	ग	म	प	प	ग	म	रे	सा
मा	रे	ऽ	ऽ	क	र	दि	खा	ऽ	वे

(सञ्चारी)

×		०		२		३		०	
नि॒	नि॒	प	रे	ग	ग	म	म	म	म
धै	व	त	रि	ख	म	म	ऽ	ध्य	म
×		०		२		३		०	
प	प	नि॒	प	सां	सां	सां	नि॒	नि॒	नि॒
प	ऽ	ञ्च	म	ख	र	ज	नि	षा	द
×		०		२		३		०	
प	गम	प	प	नि॒	नि॒	पध	प	म	रे
ग	ऽऽ	धा	र	रो	हे	अ	व	रो	हे
×		०		२		३		०	
सा	सा	ग	म	प	प	म	म	रे	सा
सु	र	व	र	ज	को	गा	ऽ	ऽ	वे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(आभोग)

×		०		२		३		०	
पप	प	सांसां	सां	मप	सां	निनि	पप	सां	सां
वाऽ	दी	विवा	दी	संवा	दी	अनु	वादी	स	म
×		०		२		३		०	
रेंगंमं	मंगं	रेंरें	सां	निनि	प	पम	प	मरे	सा
पूऽऽ	रया	औऽ	ढ़ो	खाऽ	ड़ो	ऽऽ	ऽ	करे	ऽ
×		०		२		३		०	
रेरे	सारे	गम	प	सा	निप	म	रे	सा	सा
नाऽ	ऽऽ	ऽ	द	कोऽ	ऽ	भो	गी	ही	के
×		०		२		३		०	
सा	रे	ग	म	प	म	मम	रेरे	सा	सा
व	ड़	हं	ऽ	स	व	ड़ोंको	सुना	ऽ	वे॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बड़हंसी = धमार

(स्थायी)

×			०		२		०			३			
नि	नि	प	म	प	प	म	ग	ग	म	रे	रे	सानि॒	सा
आ	ऽ	ये	ऽ	ऽ	न	न्द	ला	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
×			०		२		०			३			
सा	रे	सा	नि॒	प़	नि॒	सा	रे	ग	म	प	धनि॒	म	प
ब्र	ऽ	ज	ना	ऽ	रि	न	सँ	ऽ	ऽ	ग	ऽऽ	ऽ	ऽ
×			०		२		०			३			
नि	नि	सां	नि॒	म	प	धनि॒	ध	प	ग	म	रे	सा	सा
हो	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽऽ	खे	ऽ	ऽ	ल	ऽ	न	ऽ॥

(अन्तरा)

×			०		२		०			३			
म	प	प	नि	नि	सां	सां	सां	रें	गं	रें	सां	नि॒	प
थ	ऽ	क	थ	ऽ	क	ऽ	कु	म	ऽ	कु	ऽ	ऽ	म
×			०		२		०			३			
ध	ध	नि॒	प	म	प	ग	म	म	रे	रे	ग	रे	सा
मा	र	त	सु	ख	प	र	को	ऊ	ऽ	क	र	त	ऽ
×			०		२		०			३			
सां	नि	नि	सां	रें	गं	गं	रें	सां	नि	धनि॒	प	नि॒	प
हँ	ऽ	सि	हँ	ऽ	सि	ऽ	रँ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ग	ऽ	ऽ

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लंक दहन सारंग

(ध्यानम्)

भस्मोज्वलो स्वपत्र शूल धारिणी वह्नि स्वरूपा गम्भीर नादा ।
मध्याह्न समये हनुमत्प्रोक्ता लंका दहना मेघ रागस्य भार्या ।।

(सङ्गीत दर्पणे सङ्गीत सारे च)

गन्धार ग्रहमाचष्टे वीरे रौद्रे प्रमुज्वले, धत्यक्तौ कोमलौ गनि मध्याह्ने गीयते वुधैः ।

(सङ्गीत शास्त्रे)

गन्धारः कोमलः यत्र निषादः पूर्व संज्ञकः,
मनि वादि समवादि ध हीनः कथितो वुधैः ।।

सङ्गीत नाद विन्दु

इस रागिणी में म वादि, नि, समवादि, तथा दो निषाद का प्रयोग है, ध वर्जित स्वर होने पर इसे षाड़व जाती मानी गई है। ग॒, नि, स्वर कोमल माने गये हैं।

आरोहणावरोहण = सा रे म प नि सां ।
सां नि॒ प म रे ग॒ म रे सा ।।

लंकदहन सारंग = चौताल

(स्थायी)

× म	म	० रे	रे	२ रे	सा	० सा	सा	३ नि़	प़	४ सा	सा
ता	ऽ	न	ऽ	त	रँ	ग	ह	म	ऽ	ऽ	ऽ
× नि़	नि़	० सा	सा	२ रे	म	० म	प	३ मनि़	प	४ म	रे
स	ऽ	प्त	ऽ	सु	र	ऽ	ऽ	रँऽ	ऽ	ग	ऽ
× ग॒	ग॒	० म	रे	२ म	प	० नि॒	प	३ नि	नि	४ सां	सां
गि	न	ऽ	ऽ	ल	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य	ऽ
× नि॒	नि॒	० प	प	२ म	रे	० ग॒	म	३ म	रे	० नि़रे	सा
शु	ऽ	द्ध	ऽ	अ	ला	ऽ	ऽ	प	ऽ	ऽऽ	न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अन्तरा)

×		०		२		०		३		४	
म	प	नि	सां	सां	सां	सां	सां	नि	रों	रेंरें	सां
मु	ऽ	र	ऽ	छ	ऽ	ना	ऽ	ग	ज	ग्राऽ	ह
×		०		२		०		३		४	
रें	रें	रें	रें	मं	रें	सां	सां	प	नि	प	प
ता	ऽ	ऽ	ल	त	र	ल	अ	द	भु	ऽ	त
×		०		२		०		३		४	
नि	सां	सां	सां	रें	नि	म	प	नि	नि	सां	सां
ग	त	ह	म	फ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि	नि	नि	प	म	रे	ग	म	रें	नि	रें	सा
ले	ऽ	को	ऽ	धु	रा	ऽ	ऽ	पु	प	ऽ	न

(सञ्चारी)

×		०		२		०		३		४	
म	रे	रे	रे	सा	सा	नि़	प़	सा	ग	मरे	सा
धा	ऽ	गु	रु	धु	र	प	द	क	ल	सज	को
×		०		२		०		३		४	
सा	म	म	म	नि	नि	नि	नि	मप	गम	मरे	सा
ता	ऽ	ऽ	ल	सँ	भा	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	रे
×		०		२		०		३		४	
प़	नि़	सा	सा	रे	रे	गम	रे	मनि़	प	मम	म
गं	ऽ	ज	ऽ	ग	म	ऽऽ	क	निऽ	ऽ	शऽ	न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

(आभोग)

×		०		२		०		३		४	
मनि॒	प	नि	सां	सां	सां	सां	सां	रें	मं	.	रें
सऽ	दा	स	ऽ	द	ऽ	गु	रु	उ	ऽ	त्त	म
×		०		२		०		३		४	
सां	सां	पनि॒	प	नि	नि	सां	सां	नि	नि	सां	सां
ना	ऽ	मऽ	ऽ	जो	ऽ	गु	ण	ले	ते	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि॒	पम	मम	ग॒म	रे	ग॒	म	म	म	रे	नि॒	सा
गु	रुऽ	जाऽ	मेंऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ	न	ऽ

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लंकदहन सारंग=धमार

(स्थायी)

×			०		२		०			३			
म	प	सां	सां	सां	नि॒नि॒	नि॒प	नि॒	नि॒	पप	मरे	म	रे	सा
ड	फ	ब	ऽ	ऽ	जाऽ	वत	आ	ऽ	वत	मोऽ	ह	ऽ	न
×					२		०			३			
सा	रे	रे	ग॒	ग॒	म	रे	म	नि॒	प	निरें	सां	नि॒नि॒	प
सँ	ग	लि	ये	ऽ	स	ब	न	यो	ऽ	नाऽ	ऽ	रीऽ	ऽ

(अन्तरा)

×			०		२		०			३			
म	म	म	म	म	म	म	रे	म	प	सां	सां	निरें	सां
गु	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ल	ऽ	अ	बी	र	कु	म	कुऽ	म
×				०	२		०			३			
रें	मं	रें	रें	रें	सां	सां	म	प	म	नि॒	नि॒	प	प
मा	र	त	ए	ऽ	क	ऽ	ए	क	ऽ	प	ऽ	र	ऽ
×			०		२		०			३			
मं	रें	गुं	मं	रें	सां	सां	रे	म	प	सांरें	सां	नि॒प	मप
बा	ज	त	बी	ऽ	न	ऽ	क	र	ऽ	ताऽ	ऽ	रीऽ	ऽऽ
×					२		०			३			

५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुघराई

(ध्यानम्)

सुघ्राइ स्यान्मृदुगमनिका रोहणे धैवतेन
हीनेत्युक्ता पुनरभिहिता चावरोहे ध युक्ता ।
वादीस्यात्पञ्चम इह सुसमवादि षड्जो प्रयुक्तो
मध्याह्नात्प्राक सरस मधुरं गीयते बुद्धिमद्भिः ॥

(राग कल्प द्रुमांकुरे)

तीवर रिध कोमल ग म नि चढ़त न ध लगाई ।
सा प वादि समवादितें गुणि गावत सुघराई ॥

(राग चन्द्रिका सार)

ग, म, नि, कोमल स्वर आरोह में धैवत (ध) वर्जित सा, प, वादि तथा समवादि दिवसके द्वितीय प्रहर में गाया जाता है। दो निषाद लगाये जाते हैं।

आरोहावरोहण—नि़ सा रे ग॒ म प नि सां ।
सां नि॒ ध प म रे ग॒, मरे सा ॥

सुघराई=मोहन ताल

(स्थायी)

									६	०	७	०
									नि़	सा	सा	रे
									स	मा	ऽ	न
×	२	०	३	०	४	०	५		६	०	७	०
ग॒	ग॒	मरे	सा	नि॒	प	ग॒म	रे सा		ध	प	रे	रे
क	ऽ	ऽऽ	ऽ	ली	ऽ	ऽऽ	ऽ ऽ		क	ऽ	र	ऽ
×	२	०	३	०	४	०		५				
ग॒	म	पनि॒	सां	प	नि॒	पम	ग॒म	रे				
न	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ॥				

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अन्तरा)

×	२	०	३	०	४	०	५	६	०		७	०
म	प	नि	सां	सां	सां	रें	रें	रें	ग॒	मं	रें	सां
रा	ऽ	ऽ	ज	सा	ऽ	ज	के	ऽ	तू	ऽ	अ	ब
×	२	०	३	०	४	०	५	६	०		७	०
रें	रें	रें	सां	प	नि॒	प	नि॒	प	नि॒	प	म	ग॒
इ	ऽ	न्द्र	स	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न
×	२	०	३	०	४	०	५	६	०		७	०
म	रे	नि़	सा	म	रे	रेग॒	म	रे	ग॒	–	म	रे
अ	बडा	ऽ	ऽ	रीं	ऽ	ऽऽ	ऽ	कु	वे	ऽ	ऽ	र
×	२	०	३	०	४	०	५	६	०		७	०
म	प	ग॒म	प	नि॒	नि॒	पम	ग॒म	प	ध	नि॒	प	–
छा	ऽ	योऽ	ऽ	तु	ब	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×	२	०	३	०	४	०	५	६	०		७	०
म	प	ग॒म	प	म	प	नि	नि॒	प	मरे	ग॒	रे	सा
श	ऽ	रऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	या	ऽ ॥

(सञ्चारी)

×	२	०	३	०	४	०	५	६	०		७	०
म	प	नि॒	नि॒	प	मप	नि॒प	प	नि॒	प	म	रे	रे
ता	ऽ	न	ऽ	से	ऽऽ	नऽ	के	ऽ	प्र	ऽ	मु	ऽ
×	२	०	३	०	४	०	५	६	०		७	०
ग॒	ग॒	म	ग॒	म	प	ध	प	म	प	–	ग॒	ग॒
र	ऽ	हो	ऽ	ऽ	अ	ऽ	ऽ	च	ऽ	ऽ	ल	ऽ
×	२	०	३	०	४	०	५	६	०		७	०
म	रे	सा	सा	रे	ग॒	ग॒	म	रे	रे	रे	सा	सा
ज	ला	ऽ	ल	दी	ऽ	न	ऽ	ऽ	अ	क	ब	र
×	२	०	३	०	४	०	५	६	०		७	०
रे	ग॒	म	रे	म	म	प	प	प	नि॒ध	पग॒	मरे	सा
शा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

(आभोग)

×	२	०	३	०	४	०	५	६	०			७	०
म	प	नि	सां	सां	रें	सां	सां	प	नि	—		म	प
ज्यों	ऽ	ले	तो	ऽ	ना	ऽ	म	ऽ	ऽ	ऽ		ऽ	ऽ
×	२	०	३	०	४	०	५	६	०			७	०
गं	गं	मं	रें	सां	सां	नि	प	मप	ग	म		रे	सा
म	ऽ	धु	ऽ	अ	ध	ऽ	ऽ	ऽऽ	र	ऽ		ऽ	न॥

——

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुघरई=धमार।

(स्थायी।)

×			०		२		०			३			
										म	प	नि	नि
										ए	ऽ	री	ऽ
सां	सां	सां	रें	सां	नि॒	प	ग॒	म	प	नि॒	नि॒	प	प
बा	ऽ	ऽ	ज	त	ड	फ	बी	ऽ	न	हो	ऽ	री	ऽ
ग॒	ग॒	म	रे	रे	सा	नि॒सा	रेग॒	म	रे	म	प	ग॒	म
खे	ऽ	ल	ऽ	त	गो	ऽऽ	पीऽ	न	ऽ	घे	ऽ	री	ऽ
प	नि॒	नि॒	प	म	ग॒	म	प	नि॒ध	नि॒प	म	प	नि	नि
न	न्द	ऽ	ला	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ए	ऽ	री	ऽ।

(अन्तरा)

×			०		२		०			३			
म	प	नि	नि	सां	रें	रें	सां	रें	ग॒ं	मं	रें	सां	नि॒सां
ऐ	ऽ	सो	ऽ	छ	बी	ऽ	र	ऽ	पि	च	का	ऽ	रीऽ
नि॒	नि॒	प	म	प	ध	प	म	ग॒	ग॒	म	प	नि॒	प
मा	ऽ	ऽ	र	ऽ	त	ऽ	स	खी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न
ग॒ं	ग॒ं	मं	रें	रें	नि॒	नि॒	सां	रें	सां	नि॒	प	म	प
दु	म	न	ऽ	ऽ	भ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ	ब	ऽ
सां	सां	नि	सां	सां	नि	प	ग॒	ग॒	म	म	प	नि	नि
ला	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ला	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ए	ऽ	री	ऽ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुद्राकी कन्हाड़ा

ग॒, ध॒, नि॒,

आरोहणावरोहण = सा, म, ग॒, रे प, ध॒ नि॒ सां।

सां नि॒ ध॒ प ग॒ म रे सा ॥

(स्थायी)

×		०		२		०		३		४	
सा	म	म	म	ग॒	ग॒	ग॒	रे	रे	सा	सा	रे
आ	ऽ	ऽ	ऽ	द	ऽ	ऽ	क	ठि	न	ऽ	ऽ
नि़	सा	रे	म	म	म	प	मम	प	मग॒	मरे	सा
गा	ऽ	ऽ	ऽ	इ	ये	ब	ऽऽ	जा	ऽऽ	इऽ	ये
म़	ध़॒	नि़॒	प़	नि़॒	ध़॒	नि़॒	नि़॒	ध़॒	ऩ॒	ध़॒	ध़॒
ये	ऽ	ऽ	ऽ	शु	द्ध	ऽ	ऽ	मु	ऽ	द्रा	ऽ
नि़॒	ध़॒	नि॒	सा	सा	रे	सा	स/	सा	ध॒	ध॒	प
ऽ	ऽ	शु	द्ध	वा	ऽ	णी	शु	द्ध	सँ	ग	त
प	म	ग॒	ग॒	ग॒	रे	रे	मम	मप	मग॒	ग॒म	रेसा
शु	द्ध	अ	ऽ	च	र	शु	द्धऽ	ताऽ	नऽ	ताऽ	लऽ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अन्तरा)

×		०		२		०		३		४	
ध॒	ध॒	नि॒	सां	सां	सां	सां	सां	नि॒	रें	सां	सां
शु	ऽ	द्ध	ऽ	अ	लँ	ऽ	का	ऽ	ऽ	र	ऽ
×		०		२		०		३		४	
सां	रें	सां	सां	ध॒	ध॒	नि॒	सां	सां	सां	सांनि॒	रें
सं	ऽ	की	ऽ	र	या	वि	क्ष	त	ऽ	नेऽ	म
×		०		०		२		३		४	
सां	सां	नि॒	नि॒	नि॒	ध॒	नि	पम	पम	ग॒	म	म
वि	स	म	ऽ	प्र	का	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	श॥

(सञ्चारी)

×		०		२		०		३		४	
ग॒	ग॒	म	ध॒	ध॒	प	ध॒	ध॒	ग॒	ग॒	म	ग॒
स	स	वि	स	म	अ	ती	ऽ	ऽ	ऽ	त	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ग॒	ग॒	म	रे	सा	सा	सां	सां	सांनि॒	नि॒	ध॒	प
अ	ना	ऽ	ग	त	ज	ब	हो	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ

(अभोग)

×		०		२		०		३		४	
ध॒	ग॒	ग॒म	पध॒	नि॒	–	सां	–	सां	रें	सां	सां
ता	ऽ	नऽ	सेऽ	न	ऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ	मा	ता
×		०		२		०		३		४	
नि॒	ध॒	पम	ग॒	मप	म	ग॒	ग॒	म	मरे	रेसा	सा
क	र	तऽ	ता	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुद्राकी कन्हाड़ा=धमार

(स्थायी)

×			०		२		०			३			
ध॒	ध॒	प	ध॒नि॒	ध॒प	मग॒म	रेसा	सा	म	म	ग॒	म	प	प
हो	ऽ	ऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	ब	स	न्त	में	ऽ	खे	ले
×			०		२		०			३			
नि॒	ध॒	प	म	ग॒	मरे	सा	म	ग॒	रे	प	ध॒	प	प
दु	ला	ऽ	ऽ	ऽ	लऽ	ऽ	न	ऽ	न्द	ला	ऽ	ल	ऽ॥

(अन्तरा)

×			०		२		०			३			
म	ग॒	म	प	ध॒	प	सां	सां	–	सां	रें	सां	नि॒	ध॒प
बा	ऽ	ऽ	ज	त	ऽ	ड	फ	ऽ	बी	ऽ	ऽ	न	ऽऽ
×			०		२		०			३			
सां	रें	सां	मं	ग॒ं	मं	रें	सां	नि॒	ध॒	ग॒	म	प	ध॒
च	ढ़ा	ऽ	व	ऽ	त	ऽ	अ	ऽ	ऽ	बी	ऽ	र	ऽ
×			०		२		०			३			
ग॒	म	ध॒	पम	ग॒	मरे	सा	सा	म	म	ग॒	म	प	प
गु	ऽ	ऽ	लाऽ	ऽ	लऽ	ऽ	ब	स	न्त	मे	ऽ	खे	ले॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ॐ

श्री श्री दुर्गा सहाय ।

अथः दीपक रागः ।

(ध्यान)

वालारतार्थं प्रविलीन दीपे
गृहेऽन्धकारे सुभगो प्रवृत्तः ।
तस्याः शिरो भूषण रत्न दीपे
लज्जां दधौ दीपक राग राजः ॥

षड्जांश ग्रहन्यासं पूर्णा दीपक स्तथा ।
तृतीय यामे दिवसे गीयते विबुधैर्जनैः ॥

मतान्तरे :—

गान्धारांश ग्रहन्यासं ओड्व दीपकस्तथा ।
प्रथम प्रहर रात्रे गीयते विबुधैर्जनैः ॥

संगीत शास्त्र में दीपक राग का तीन चार प्रकार के मत भेद पाये जाते हैं परन्तु मैं दो प्रकार का ही शिक्षा किया हूँ। अब सम्पूर्ण और ओड्व जाति का वर्णन कर रहा हूँ :—

सम्पूर्ण जाति के दीपक के आरोही में ऋषभ वर्जित होता है। इसमें र और ध कोमल और मध्यम में तीव्र व्यवहार होता है।

स्वर्गीय जयपुर (राजपुताना) महाराज माधव सिंह बहादुरजी के सभागायक स्वर्गगत गुरु निहाल सेनजी (संगीत-गुरु तानसेनजी के वंशधर) हम लोगों को दो प्रकार के दीपक राग कि शिक्षा दिये थे। वे कहा करते थे कि हनूम के मतानुसार यह द्वितीय राग है और सूर्य नेत्र से निर्गत हुआ है। सम्पूर्ण जाति षड्ज वादी स्वर और पञ्चम सम्वादी स्वर है। इस राग के ओड्व जाति में र और प वर्जित एवं निषाद-नि-कोमल व्यवहृत है। इसमें गान्धार वादी और धैवत सम्वादी है।

भरत के मतानुसार इस राग कि रागिणी :—विहङ्गिनी, गौरी, गौयडी, गुर्जरी, रुद्राणी, कर्णाटी। अष्ट पुत्र-कुन्तलः, कानलः, कलिङ्गः, चम्पकः, कूसुमाः, रामः, लहिलः, हिमालः। पुत्रा यथाः—कुसुमः, टंकी, रहसमंगला, फिरोदन्ती, सन्ध्या। पुत्रवधूगण :—प्रदीपीका, भीम पलाशी, लोहिता, पददीपकी। नाद विन्दु के मतानुसार रागिणी और दीपक राग का पुत्रवर। दीपक राग का अंगवर्ण लोहित, पाटलवर्ण वस्त्र परिधान कर गल भूषण वृहन्मुक्तमाल धारण कर मत्त गज पर आरूढ़ हैं।

बहु स्त्री परिवृत। वाला स्त्री रमण इच्छा से लज्जित हो दीप को बुझा कर गृह अन्धकार कर लिये हैं। शिर पर मणि माणिक्य जड़ित रत्न भूषण। उस रत्न मुकुट कि उज्वलता से अत्यन्त लज्जित होते हैं। संगीत शास्त्र में दीपक राग के विषय में इसी प्रकार उल्लिखित हुआ है।

आरोही—स ग, मे प, ध न, सं—

अवरोही—सं ध, प, मे ग, र स।

षाड़व—षाड़व जाति। षड्ज वादी स्वर और पंचम सम्वादी स्वर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाने का समय—दिन के तृतीय प्रहर में। कल्याण के ठाट से निषाद वर्जित के तरह गाने के लिये निहाल सेन जी आदेश दिये हैं। संगीत पारिजात दीपक राग का भैरव राग के ठाट से सम्पर्कित किया है। संगीत शास्त्र के प्रणेतागण नाना प्रकार के मतों का उल्लेख किये हैं। परन्तु यह मेरी गुरुमुखी विद्या जैसा सिखा हूँ, वैसा ही पुस्तक में भी प्रकाश कर रहा हूँ। कृपया गुणी गण इस राग के विषय में ध्यान देंगे। आजकल यही प्रचलित ठाट है। इस राग के आरोही में निषाद अल्प व्यवहृत होना चाहिये :—

यथा :—ध सं सं, न सं, प ध प, प ग, प मी ग र , स। स प, प मी ग, मी प ध , प प, मी ग, र , स। ध़ ध़, प़ म़ प़, ऩ स, ध़ स ऩ स, ऩ र स, ग र स, म़ प़ ऩ स, र र स, ग मी गर स, प प, मीग, पग, र र, स। ग मी प, प, ध ध, प,–मी प, ध मी प, मी ग, प प ग, प मी ग, स, स, स ग मी ध प, मीग, पप, ग, ग र स, ऩ र स; प ध प प, मी प न, प न रें रें सं, पंगं,–पं मीं गं, रें, सं; ध ध प, न सं, ध सं, न सं गं मीं पं, मीं पं, सं गं, पं मीं ग रें सं; ध ध, पग, मी ग, मी प ध प, स ग मी प, मी ग,–ध मी ग, स ग, प ग, मी ग र स।

राग दीपक—मणिताल

(स्थायी)

×	२	३	४		
स स ध़	ऩ र स	प प मी	ग मी	गर	स।
तू ही –	अम्बे–	भ वा	नी	–	–
×	२	३	४		
प़ प़ प़	ऩ र	स स स	ग मी	धप	प
असुर	सं	हा–	रि	नी–	–

(अन्तरा)

×			२		३			४		
प	न	ध	प	सं	पं	पं	मंगं	रें	सं	सं
आ	—		न	न्	दी	—		दु	र्गे	–
×			२		३			४		
ग	प	प	मं	प	मं	ध	पप	गग	गर	स
भ	क्त		उ	–	द्धा	–	र	—	नी	–
×			२		३			४		
प	प	प	नन	सं	सां	नि	र	रं	सं सं	सं
उ	मा	–	शि	वा	–	नी	ऽ	रै	– –	–

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

×			२			३				४		
पं	पं	पं	मं	पं		गं	गं	रें		न	रें	सं
क	रा	–	ल	–		व	द	–		नी	–	–
सं	सं	प	न	धु		प	प	मं		प	प	प
त्रि	शू	–	ल	शू		–ल	ख	ऽप		–	र	–
प	ग	रे	स	स		स	धु	न		धु	प	प
धा	–	र	नी	–		ज्वा	ला	–		मु	खी	–
स	स	नुस	रे	रे		स	प	प		मंध	प	प
यो	–	ग	मा	या		त्रि	लो	क		~~~		
न	धु	प	पमं	प		ग	प	ग		रे	स	स।
जा~~~			न~~~			~~ नी ~~~				~~~		

(संचारी)

×			२			३				४		
स	स	स	न	धु		प	प	न		न	स	स
शं	क	र	रा	णी		गौ ~~~				री ~~~		
स	प	प	पमं	पप		प	प	प		न	धु	प
सि		द्ध	दा	—		य	नी ~~~			~~~		
प	ग	प	मं	प		न	न	धु		प	ग	प
पा	वं	~~~	ती	–		ना	–	रा–		य	नी	~~~
ग	म	प	धु	म		प	प	प		ग	रे	स
मु	–	क्ति	दा~~~			~~~				नी ~~~		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(आभोग)

×			२		३			४		
प	प	प	न	न	सं	सं	सं	न	रं	सं
ता	–	न	से	–	न	–	दा	स	प	रं
×			२		३			४		
पं	पं	पं	मंगं	पंगं	रं	रं	सं	सं	सं	सं
की ऽऽऽ			जे ऽऽऽ		कु ऽऽऽऽ			पा ऽऽऽ		
×			२		३			४		
प	प	प	न	ध	मं	प	प	ग	मं	प
सा	र	दा	ऽऽऽ		स	र	–	स्व	ती	–
×			२		३			४		
स	स	प	न	ध	मं	प	ग	पग	रे	स
वा	–	क	ऽऽऽ		वा	ऽऽऽ		नी ऽऽऽ ॥		

ॐ

श्री श्रीदुर्गा सहाय ।

पंचमः पितृ बंशियो रि-धौ मुनिकुलोद्भवौ ।
निर्दैत्य कुल सञ्जात ईत्येषां कुल निर्णयः ॥

पंचम स्वर पितृ बंश में पैदा हुआ है, और ऋषभ, धैवत यह दोनों मुनि कुल जाति है। निषाद दैत्य कुल का है। इस प्रकार सबका कुल निर्णय किया गया।

स-म-प-ब्राह्मणा ज्ञेया क्षत्रियौ च रि-धौ मतौ ।
वैश्य जाति ग-नि ज्ञेयौ शुद्राःस्य विकृता स्वराः ॥

तीनों में स-म-प यह तीनों ब्राह्मण हैं। ऋषभ, धैवत क्षत्रिय माने गये हैं। गान्धार, निषाद दोनों वैश्य जाति के हैं और कोमल स्वर सब शुद्र जाति के होते हैं।

कमलाभः स्वरः षड़ज ऋषभ पिंजरः स्वरः ।
हाटकाभस्तु गान्धारः कुन्दायो मध्यमः स्वरः ॥

षड़ज कमल जैसी आभा वाला (गुलाबी अथवा रक्त वर्ण) तथा ऋषभ हरे वर्ण (जैसे ताल वृक्ष) का होता है। गान्धार सोने जैसा और मध्यम कुन्द पुष्प जैसा (सफेद) होता है।

पंच मस्तु स्वरः श्यामो धैवतः पीत वर्णयूक् ।
निषादः कर्बुरशेति स्वराणां वर्ण निर्णयः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पंचम स्वर श्याम (काले) रंग का और धैवत पीले रंग वाला होता है। और निषाद कर्बुर (६ अर्थ—१ राक्षस, २ सोना, ३ काला बैंगन, ४ रंग बिरंगा, ५ पानी, ६ खून) बहुरंगे वर्ण का है। यह स्वरों का वर्ण (रंग) निर्णय किया गया है।

(संगीत पारिजात)

राग नट नारायण ध्यान।

स्त्री वेशधारी पुरुषोनवीनः संगीत शास्त्रे भ्रमिमा दधानः।
गायन् सतालं मलयं मनोज्ञः स्यान्नटनारायण राग एषः॥

गान्धारांश ग्रहन्यासं सम्पूर्णं हनुमन्मते
अवरोहे ध वर्ज्जितं नटनारायणस्य च।
कान्हड़ा नटसंयुक्तः कल्याण मिश्रित पुनः
नटनारायणो जातः सन्ध्या काले प्रगीयते॥

संगीत महोदधौ, राग कल्पद्रुमांकुरे नोक्तं।

राग नटनारायण—ताल चौताल। (विलम्बित लय।)

'मध्यम' 'म' वादी और षड़ज 'सा' समवादी सम्पूर्ण जाति।

ठाट :—सा म, गम, पध, सां।

नि प, मग, मरे, म ग नि रे सा।

(स्थायी)

× सा सा	० म म	२ म म	० म म म म	३ म म	४ ग ग
वा –	णी——	———	वी – णा –	पा –	णि –
× ग म	० प प	२ ध ध	० सां सां ३ नि प	४ म म	
ज ग	त –	ज न	नी – दे –	वी –	
× म म	० म म	२ म रे	म ग ० ग ग	३ म रेम	४ ग नि रे सा
म हां	———	वां –	——— क वा	– दि	——— नीं –॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

राग नटनारायण

(अन्तरा)

×		०		२		०		३		४			
प	प	प	प	ध	ध	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
स्वे	–	त	–	व	र	णी——		——		मा	–	ता	–
×		०		२		०		३		४			
सां	सां	सां	सां	सां	मं	मं	गं	नि	रें	सां	सां		
स्वे	–	त	–	प	द्मा	——		स	–	नी	–		
×		०		२		०		३		४			
नि	नि	प	प	मग	म	रे	म	म	म	ग	ग		
स्वे	–	त	–	व	स	——		——		नी	–		
×		०		२		०		३		४			
ग	म	प	प	ध	ध	सां	सां	नि	नि	प	प		
वी	–	णा	–	ध	–	र	–	णी	–	——			
×		०		२		०		३		४			
म	ग	म	रे	म	म	ग	ग	ऩि	रे	सा	सा		
वे	–	द	–	प्र	का	——		श	–	नी	–॥		

(संचारी)

×		०		२		०		३		४		
म	म	म	म	म	प	प	प	प	ध	प	म	
ज्ञा	–	न	–	वि	द्या	–	दा	~~~~		~~~~नि		
×		०		२		०		३		४		
म	ग	म	रे	म	म	ग	ग	ग	ग	ऩि	रे	सा
भ	–	क्ति	–	मू	–	क्ति	–	प्र	दा	यि	–	यी

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

×	०	२	०	३	४
सा सा,	सा सा,	नि़ प़,	म़ म़,	.प .ध,	सा सा
स क	ल –	त्रि द्या	– दा	दा यि	– यी –
×	०	२	०	३	४
म म,	म म,	म ग,	म रे,	म ग,	नुरे सा
आ तृ	मा –~~~	रा ~~~	~~~	नि ~~~	~~~

(अभोग)

×	०	२	०	३	४
म म,	प ध,	सां सां,	नि रें	सां, सां	सं, सं सं
तुँ –	अ ध	म सु	र –	ख ~~~	~~~
×	०	२	०	३	४
मं मं,	गं गं,	मं रें,	मं गं,	गं नि	रें सां
गु ण	न –	हि –	न –	मा –	ता –
×	०	२	०	३	४
सां सां,	सां सां,	नि नि,	नि नि,	प प,	म म
कृ पा	– –	क –	र –	दी –	जे –
×	०	२	०	३	४
म म,	म म,	ग ग,	म रे म ग	नि़ रे,	सा सा
च र	ण –	अ ध	म ~~~	~~~	~~~
×	०	२	०	३	४
मं मं,	मं मं,	गं गं	गं, मं गं,	गं	नि, रें सां
ता –	न –	से –	– न –	के~~~	~~~
×	०	२	०	३	४
नि प,	म म,	ग म,	रे म,	ग	नि, रे सा
ना ~~~	~~~रा ~~~	~~~	~~~य ~~~	~~~	~यी~~~

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग नटनारायण—धामार

अस्थायी

०	३	१ ×	०	२
स स म	गम म – प म –	ध प म र	ग ग –	ऩ र स
हो – री खे	——ले –	प्या – री	~~~~	~~~~
०	३	१ ×	०	२
सं म ग –	म प – ध सं –	सं न रं –	सं न	– प प
अ ब कै	से ~~~	जाँ ऊ –	मा –	इ –
०	३	१ ×	०	२
म म म –	प ध – प प –	म ग ग –	म प	म – म
तु म हा	रो~~~~	सं ~~~~	~~~~	ग –

अन्तरा

१ ×	०	२	०	३
म म़ प –	प ध	– प ध	– सं सं नं	– रं रं – सं सं
स खि न्	सं –	ग –	आ – प	भी – जे –
१ ×	०	२	०	३
मं मं मं –	मं रं	– मं गं	– न रं सं	– न न – प प
औ – र	न –	को –	भि जा –	वे~~~~
१ ×	०	२	०	३
ध म म –	प म	– प प	– ध सं सं	– न न – प प
मा~~~~	र –	त –	के ~~~	श – र –
१ ×	०	२	०	३
म ग म –	र म	– ग म	– स स म	– म म – ग म
रं ~~~~	~~~~ ग	–	हो – री	खे ले –

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।पुरानी मल्लारिका ध्यानः।

गौरी कृष्णा कोकिल कंठ नादा मतिच्छलेनात्मा पतिंस्मरन्ति।
आदाय वीणां मलिना रुदन्ति मल्लारिका यौवन दूना चित्ता॥
(संगीतरत्नाकर, संगीतनाद विन्दु, संगीत महोदधौ।) मेघ-राग से उत्पत्ति।

ग॒, नि॒—(कोमल) रे, प, वादी-सम्वादी।
आरोहावरोहण—सा रे, म, रे, प नि॒ नि ध, नि सां।
सां नि॒ प, ध म, प म, ग॒ म रे सा॥
यह राग वक्र भाव से आरोहावरोह गाया जाता है। और कभी कभी म प, ध नि सां इस प्रकार गाने का नियम है। और कभी कभी ध सां आरोह में व्यवहार करने का नियम है।

पुरानी-मल्हार—चौताल। (विलम्बित-लय)

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	ध	धं	प	नि॒	प	ध	म	धध	निसां	सां	सां
का	——	—रि	——	—बा	——	—द	र	घे	रि—	—आ	ई।
नि	सां	नि	रं	सां	रें	रें	सां	नि	प	प	प
स	ध	न	ग	र	जे—	——मे—		——हा—		————	——।
ध	ध	ध	ध	नि	प	सां	नि॒	ध	नि॒	प	प
व	र	षे	~~~~	~~~~		~मु	~~~~	~~~~		~क	न।
म	ग॒	ग॒	ग॒	म	रे	रे	रे	रे	रे	रे	सा
बूँ	~~~~	~~~~		~द	रि	या	~~~~	~~~~		~~~~	~~~~॥

अन्तरा

×		०		२		०		३		४		
म	प	सां	सां	नि॒	नि॒	प	प	म	प	ध	नि	सां
च	प	ला	-	च	म	के	~~~~	~~~~		~~~~		~~~~।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

×		०		२		०		३		४	
रें	रें	रें	रें	सां	नि	सां	नि॒	नि॒	नि॒	प	प
दा	–	मि	नि	द	म	के	~~~~	~~~~	~~~~	~~~~	~~~~ ।
×		०		२		०		३		४	
नि	प	म	प	ध	सां	नि॒	प	म	ग॒	ग॒	ग॒
द्रु	म	या	–	डो	–	ले	–	जी	–	व	– ।
×		०		२		०		३		४	
म॒	म	रे	रे	रे	रे	रे॒	रे	रे	रे	सा	सा
ज	–	न्त	–	स	ब	डे	रा	–	–	वे	– ।
×		०		२		०		३		४	
रे	रे	रे	रे	प	प	प	प	(म ध)	प	नि॒	प
स	घ	या	–	हुँ	–	का	~~~~	~~~~	~~~~	र	व ।
×		०		२		०		३		४	
प	ध	म	प	म	म	ग॒	ग॒	म	रे	रे	सा
प	व	न	–	पु	र	व	इ	या ~~~~	~~~~	~~~~	~~~~ ॥

सञ्चारी

×		०		२		०		३		४	
स	ध	ध	ध	ध	प	नि॒	नि॒	ध	म	प	प
उ	म	ड़	घु	म	–	ड़	डे	–	रा	व	त
×		०		२		०		३		४	
प	प	प	(पप)	प	नि	प	ध	म	ग॒	म	रे
थ	र	थ	रा	~~~~	~~~~	~~~~	~~~~	~~~~	~~~~	~~~~	त ।
×		०		२		०		३		४	
रे	प	ध	म	प	म	ग॒	ग॒	म	रे	रे	सा
सु	र	न	र	प्रा ~~~~	~~~~	~~~~	~~~~	~~~~	~~~~	~~~~	या ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(आभोग)

×		०		२		०		३		४	
प	नि	सां	सां	सां	रें	सां	रें	प	गं‿मं	रें	सं
खा	ऽ	ऽ	म	घ	टा	ऽ	इ	न्द्र	धऽ	नु	ष
×		०		२		०		३		४	
रें	रें	रें	रें	सां	नि॒	प	ध	नि॒	ध	नि॒	प
व	र	खा	ऽ	व	र	खा	रं	–	–	ग	न
×		०		२		०		३		४	
म	म	रे	म	ग॒	म	रे	म	रे	रे	प	प
नि	र	खि	आ	ऽ	नं	न्द	–	भ	ये	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
म	प	नि	नि	सां	सां	रें	रें	सां	सां	नि	सां
ता	–	न	से	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ	के	ऽ
×		०		२		०		३		४	
सां	नि॒	(पध)	नि॒	प	म	प	ग॒	म	रे	सा	सा
अँ	खि	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

पुरानी-मल्हार—धमार

(स्थायी)

०					३		×			०		२	
नि़	सा	रे	म	प	म	म	(रेम)	ग॒	म	म	रे	रे	सा
म	य	–	तो	ऽ	ऽ	ऽ	डा	–	रूँ–	ऽ	ऽ	गी	ऽ
०			३				×			०		२	
(रेप)	(धम)	नि॒	नि॒	नि॒	प	प	म	रे	ग॒	म	रे	सा	सा
रं	ग	ऽ	गु	ऽ	ला	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुरानी-मल्हार-धमार ।

(अन्तरा)

×			०		२		०			३			
म	प	प	नि	नि	सां	सां	रें	रें	रें	सां	नि॒	प	प
ध	न्य	ऽ	भा	ऽ	ग	ऽ	सु	हा	ऽ	ग	ऽ	ऽ	ऽ
×			०		२		०			३			
रें	रें	रें	पं	मं	गं॒	मं	प	नि	सां	नि॒	नि॒	प	प
क	रूँ	ऽ	गी	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	ऽ
×			०		२		०			३			
नि	सां	रें	रें	रें	सां	सां	नि॒	पप	धम	प	ग॒	मरे	सा
आ	यो	ऽ	मे	रे	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ऽ
×			०		२								
रेम*	ग॒	म	म	रे	रे	सा							
डा	ऽ	रूँ	ऽ	ऽ	गी	ऽ॥							

---

* इच्छा अनुसार अन्तरा गाने के पश्चात् स्थायी में उपस्थित होने के लिए यह पंक्ति है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रागिनी प्रथम मञ्जरी

आलाप।

ऩ स, म मी, प ग मी प धु न, सं, न धु प, मी म, ग र, स, पं पं मी मं गं गं, रं सं, ऩ स ऩ ध़, .प .मी ध़ ऩ र स, ऩ स प म मी ग मी प, धु न धु प, ग मी म ग र स॥

प धु प मी म, प मी ग, ग म मी प, धु प मी प, न धु प, मी ग म म ग ग, म मी ग ग, मी प ध ऩ धु प, न धु न सं, रं रं सं सं, धु न धु प, मी मी प मी म ग, म ग र ग, र स, ऩ स॥

मी प धु न सं, रं ग रं सं रं ग मं मीं पं, मीं मं गं रं गं, रं सं न सं, न धु प, धु न धु प, प प मी, म मी प ध, प मी म ग, ग र स ऩ स॥

स स प प, मी प धु प, धु न धु प म, ग म मी प, ग मी म ग, ग र स, ऩ स प मी प प, मीं – मं मं, गं, गं रं सं न, ध, सं रं सं सं, धु न सं, न रं न ध, सं न धु प, न धु प, मी मी प प, मी म ग, ग र स॥

राग गुर्जरी।

आलाप।

स र स, ऩ ध म़ ध़, ध़ स र ग, मी ग र स, स ऩ ध़ ऩ, ध, मी ग, र ग, मी मी ग र, स र ऩ स॥

ध़ ऩ स स, र र ग ग, मी मी ग ग, र ग मी ग मी, ध़ ध़ ऩ ध़ ऩ .मी ध़ ऩ र ग र, ग मी ग रे, ग मी न ध, ध मी ग, मी ग र ग, र र ऩ स, ध़ ऩ र ग, मी मी ध ध, ग मी न ध, ध न ध, मी मी ग, मी न ध ग, र ग, ग, र र ग र, स स ऩ स॥

मी न धु न, सं न ध मी, ग, र ग, मी धु न, रं रं सं सं ध न रं गं, रं न सं सं, सं न धु न, रं गं मीं गं रं न रं गं रं सं, न ध मी ध, ग मी ग र, स र ग र, स ऩ र स॥

सं रं गं मी, गं रं सं न, ध मी ग र, ग ग र स॥

ध़ सं न रं गं, रं न रं गं, मीं मीं गं, मीं गं रं सं, रं रं न न, सं सं रं सं, सं न ध मी ग, न ध मी, ग र, ध मी ग र स॥

रागिनी जोगिनी

आलाप

स र, ग म, प ध सं, न सं, – न ध, मी म ग, म र – स॥

ध ऩ स र, ग, मी म ग, मी प ध, सं न ध, मी म, ग म ग, मी प, ध मी प, ध न ध, मी म, ग ध़ प, ध ध मी म, म ग, म र स॥

ऩ ध़, न ध़ .म़ी म़, ध़ .मी प़, ध़ स ऩ स, स र ग म, मी प ध प ध ध सं न सं, रं रं स, सं रं गं, मीं मं रं रं मं रं सं, सं न ध, न ध मी ग मी प, ध सं न सं रं सं ध न ध मी म, म ग म र स॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध ध स र ग म, म्मि प ध, ध सं न र, सं र गं 'मिं मं रं, गं मं रं, सं रं सं न सं न ध, प ध सं, नं ध मि म ग, म र स॥

सं रं गं मं पं, 'मिं मं गं रं गं मं, 'मिं मं गं मं, मं रं सं न सं, न ध मि म ग ध प ध, सं न ध मि म ग, म र स॥

रागिनी सुरालय

आलाप

न, स ग, मि ग, मि प न, न न, प मि प, मि ग र, स न, स ग, मि ग र स, ग मि प न, प न मि प, न न प मि, ग मि ग, मि ग र स॥

न न प, प न स ग, ग मि प मि ग, मि प न, सं न सं, न सं गं, 'मिं गं 'मिं पं, 'मिं गं रं सं, न सं गं रं सं, सं न, प मि प न, स ग मि ग, गं रं सं सं, सं न प, मि प, ग मि ग, मि ग, न स ग, ग मि प, प मि ग मि ग र स॥

पं 'मिं गं 'मिं गं, न सं गं 'मिं गं रं सं न न प, न प मि, न प मि ग, न प मि ग र स॥

राग लंका दहना-सारङ्ग

आलाप

म म र र, न र न स, न म प, न स र म, र प, म र ग, म र स, प म र, म न प न, म म र ग, र म प; म प न प ग र ग म, र र न स॥

म न प न, म म न प, प म प म, न, म प प, म र ग र, म र स, न न म म, र म प म, प न सं न रं सं रं रं न न, म प न सं न प म म, न म प, न प म र, ग, म र र, न र स॥

सं न रं मं, रं गं मं रं सं, म प न सं, रं रं न न, प म प, म न प न, प, र म र, ग म र म, न प, म प न र, ग म, प न प न प सं न सं, रं रं सं सं, न म, प न प, म र ग, म र र, स न र स॥

नट नारायण राग का

(आलाप)

सन, नप, धस, मग, मर, मग, नर, स, म, ग म ग, मस, प ध म, पग, म, गम, ग, नर, स। मप, धप, धसं, नसं, नन, पप, मप, धम, गप, मग, मर मग, म, गम, ग, नर, स; मम, पध, धप, धम नर, स, मग, मर, मग, नर, स। मप, धस नरं, सं, नन, प, म, मंगं, मंरं, मंगं, नरं, सं; म, म प ध, सं, मंगं, मंरं, संसं; नप, धसं, नप–, ग म ग, पध, मप, गम, रम, ग, नर, स।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रागिनी सुघरई

(आलाप)

स र ग, र ग, म म र, प प म म, प न, म प, म ग, न प ध म ग, म र स म प न न, सं न सं रं, रं सं रं गं, मं रं सं सं, प न प ध, प न प प, म प न सं, रं सं प न प, म प म ग, ग म प ग म र स।

स ध न प, प प न सं, प न, प म ग म, न न प प, न सं न प, ध म प ग, म ग म र स॥

रं रं गं गं, मं पं गं मं पं, सं न ध, न प, स र ग, म र, प, म प न प न सं रं, न न सं सं, ध न, न प म ग, प म ग, म र स॥

रागिनी धवलश्री

(आलाप)

मि न र न ध, मि ध, र मि र, न र स, र र, मि मि, स र न र, मि मि र स, मि र मि ध, न रं सं सं सं, रें न ध मि, र मि ध, न सं, ध न रें रं सं रं मिं रं रं सं, ध न ध मि, र मि र, मि मि र स॥

स न र र, म मि र र, र मि ध, न ध न, सं न र, सं रं मिं रं न ध न रं मिं रं सं, ध न रं सं, न न मि ध, मि र मि, र मि र र न र स॥

रागिनी श्रीटंकी

(आलाप)

स ध न ध, न स, र स, ग प, ध प, मि ग, र स, र र ग प, ध न ध प मि ग, प ग, ध प, मि ग र र, प ग र स॥

ग प ध प, सं, न सं रं रं, न रं न ध प प प मि, ग र, ग प, ध प, न ध प मि ग र ग, प ग र स॥

र र प प, ध प, सं सं रं सं, रं सं गं, पं, मिं गं, पं गं रं सं, न ध प प, सं न ध प, मि ग, प ग, र प, मि ग, प ग र स, स न ध पं, ध सं रं प, रें सं रं रं गं पं मिं गं, पं गं र र सं गं, पं मिं गं, रं रं पं गं, रं रं सं, न ध प, मि ग, प ग र स॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पुरानी मल्हार

आलाप

.न स र म, र ग॒ र स, र म प म, र ग॒ र म, प म र ग॒, र स .न स, न॒ न॒ .प .प न॒ .ध न॒ .प, .म .प .न स, र र प म, र र ग॒ ग॒, र न॒ र स ॥

र र म म, प न ध न, ध ध म म, प म र र, म प न॒ प, म र ग॒, र स न॒ .ध न॒ न॒ .म .प, .म .म .प न॒, .प न॒ .ध .न, स स र स, म म र ग॒, र र म म, प ध न॒ प ध प ध म, र र म प, म र ग॒ र स स .न स ॥

.म .म .प .ध, .प .न स र, ग॒ ग॒ र स, म र ग॒ र, स न॒ र म, प म प ध, न॒ प म प, न न स र, न॒ न॒ प प, म ग र ग॒, म र स स ॥

म .प न सं, रं रं मं मं पं मं रं गं॒, रं रं सं सं, न॒ न॒ प प, म म प ध, म म र र, ग॒ र स स, म प ध न॒, प न सं स, रं मं रं गं॒ रं न॒ रं सं न॒ ध न॒ न॒, प न॒ ध न॒ म प म म, प ध न॒ प, म र र, ग॒ म र स ॥

प्रातः स्मरणीय तानसेन जी की वंशावली

तान सेन जी, तान तरङ्ग जी, मान तरंग जी, सुरसेन जी, सुफल सेन जी झन्डे सेन जी, सुभाग सेन जी, सुरत् सेन जी के दो पुत्र—(सदारङ्ग, अदारङ्ग) दयाल सेन जी, कृपाल सेन जी, निहाल सेन जी, खयाल सेन जी, कृपाल सेन जी, खुशाल सेन जी, अद्भुत सेन जी, बाल सेन जी (प्रभृति पाँच पुत्र) रूप सेन जी, निहाल सेन जी लाल सेन जी, फ़ाज़िल सेन जी, मुराद सेन जी, मुराद सेन जी के तीन पुत्र (नूर सेन जी, सुख सेन जी, सुखसेन जी के पुत्र (रहीम सेन जी) रहीम सेन जी के पुत्र (अमृत सेन जी, नीयामत् सेन जी, लाल सेन जी, अमृत सेन जी के "निहाल सेन जी" (दत्तक पुत्र, वंश द्वारा गृहीत) निहाल सेन जी के भाञ्जे को दत्तक पुत्र के रूप में ग्रहण किये थे, उनका नाम—"रतन सेन जी था।" बहादुर सेन जी के पुत्र (हयदर बक्श जी) ये उच्च-स्थानीय 'ध्रुपद' तथा ख्याल के गायक थे। ये अमृत सेन जी के मातुल वंशीय थे। दुलह खाँ साहेब—"हयदर बक्श जी" को दत्तक पुत्र लिये थे। ये प्रधान एवं श्रेष्ठ थे। इनके पांच पुत्र थे, वजीर खाँ, मम्मू खाँ, अज्जू खाँ, अहमद खाँ, सलावत खाँ) वज़ीर खाँ (बीनकार) (रामपुर नवाब के दरबार के गायक)—वज़ीर खाँ के पुत्र अमीर खाँ (बीनकार) आप महाराज के दरबार में वीणा-वादक थे। आप ग्वालियर निवासी थे। मम्मू खाँ के पुत्र हफ़ीज़ खाँ शरद् और वीणावादक हैं; नवाब टोंक, नवाब रामपुर के दरबार में वीणा तथा शरद् वादन का कार्य कियां करते थे। लगभग चालीस वर्ष हुये आप परलोक गमन किये।

———

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीटंकी—चौताल ।

(श्री राग से यह राग उत्पन्न हुआ है)

रे, प, वादी संवादी । मँ,—तीव्र

रे, धा, कोमल ।

आरोहावरोहण

रे, स, ग, प, धुप, सं—

नि ध, प, मग, प ग, रेस ।—

(स्थायी)

×						०						३		४		
रे	रे	ग	प	धु	न	धु	प	प	ग	रे	ग	प	मँप	ग	रे	स.
हे	–	प्र	–	भू		ज	–	ग	~~~~~			ना	—	थ	~~~~~	
धु	प	स	स	रे	रे	न	स	ग	प	धु	सं	रेन	धु	प	प	प
ज	ग	–	त—	——		आ	~~~~~					धा	–	र	——	
न	न	धु	न	धु	प	प	मँप	ग	प	धु	प	मप	ग	ग	रे	स
गो	–	पा	–	ल	–	म	—	धु	~~~~~			सु	–	द	–	न।

(अन्तरा)

×						०						३		४		
ग	प	धु	प	सं	सं	न	सं	रें	रें	न	रें	न	धुप	प	प	प
प्र	स	न्न	व	द	न	तु	म्हा—	——				——		रो—	——	
प	मँ	प	रे	रे	रे	प	प	मँ	ग	रे	ग	प	ग	रे	रे	स
नि	त्य	–	स	त्य	–	तूं	हि	ऊँ	~~~~~			का~~~~		~~~~~		र
न	र	न	धु	प	धु	प	स	स	रे	रे	प	प	धुन	धुप	ग	रेस
नि	रौं	–	का	——		——	——	र	ना	——		रा	—	प		या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

(संचारी)

×						०						३		४		
स	स	न	रे	रे	न	धा	-प	ध	प	स	रे	-रे	स-	ग	प	प
तु	ही	अ	न	न्	त	–	अ	न्त	म	ध्य	–	न	हीं	ति	हा	रो
×						०						३		४		
ध	न	ध	प	नध	ध	पमी	-ग	रे	प	ध	प	मी	ग	रेरे	रे	स
तुँ	ही	आ	——	——	का	—	श	——	——	ध	रे	नी	~~~	~~~	~~~	~~~
×						०						३		०		
न	ध	प	प	ध	प	न	सं	रे	रे	स	ग	प	प	धा	न	धप
चौ	न्	द्र	प	प	व	भा~~~	~~~	~~~	~~~	न	~~~	~~~	~~~	~~~	~~~	~~~
×						०						३		४		
सं	सं	रं	सं	गं	पं	मीं	ग	रें	सं	सं	नरें	नध	पर	रग	र	स
को	——	——	ट	प्र	–	हृ	~~~	~~~	~~~	व	~~~	~~~	रे ~~~	~~~	या	~~~

(आभोग)

×						०						३		४		
प	ध	प	न	रें	रें	सं	सं	रें	रें	गं	पं	रें	गंरें	सं	रेंन	धप
आ	–	न	न्	——	——	द	–	म	ग	न	–	ज	प–	त	क्ष–	ध्या
×						०						३		४		
सं	सं	सं	सं	रें	न	ध	न	ध	प	न	ध	प	मी	पग	रे	स
ता	–	न	से	–	न	~~~	~~~	~~~	~~~	नि	श	दि	न	~~~	~~~	~~~

———

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट

संगीत सेवियों से निवेदन है कि संगीत-सुधा-सागर की यह अति क्षुद्र अंश मुद्रित किया जा रहा है, कारण केन्द्रीय सरकार, उत्तरप्रदेशीय एवं बंगाल सरकारों से (manscript) की मांग है।

अर्थाभाव के कारण यह वृहत् पुस्तक अब तक प्रकाशित न हो सका।

यह संक्षिप्त खंड में संगीत का सामान्य व्याकरण और बारह लुप्तप्रायः रागिणियों की ध्रुपद एवं धामार-सन्निवेशित किया गया है, परन्तु उक्त रागिणीयों की विस्तार (आलापचारी) देना सम्भव न हो सका। इस त्रुटि को आप लोग कृपया क्षमा करें।

भगवत् कृपा से यदि भविष्य में इसकी प्रथम खंड का प्रकाशन सम्भव हो तो उसमें १२० ध्रुपद और १२० धामारों की समावेश रहेगी जो कि संगीतगुरु तानसेनजी का घरवाना का ध्रुपद-धामार है। और भक्त सूरदासजी, तुलसीदासजी, मीराबाई प्रभृति का भजन, खयाल आदि का भी समावेश रहेगा। उपरन्तु इसमें प्रचलित और अप्रचलित २०० राग-रागिणीयों की प्रस्तार और सर्वांगीन व्याख्या दिया जायगा।

ऐसे बारह खंडों के प्रकाशन की इच्छा है।

विज्ञ महोदयों के समर्थन पर ही मेरा श्रम सार्थक होगा।

विनीत—

ग्रन्थकार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धि-पत्र संगीत-सुधा-सागर (संक्षिप्त संस्करण)

पृष्ठ-संख्या	पंक्ति	विभाग	अशुद्ध	शुद्ध
२	१	५		ग
”	१४	२	ज—पावन	जग पावन
५	११	१	म	मं
”	११	२	सा	सां
६	अन्तिम	–	–	नि प मं ग रे सा
८	संचारी की प्रथम पंक्ति	६	म	में
९	” ९	४	गं	ग
११	३	१	सां सां सां	सां सां सां
”	३	३	ध मं	ध मं
१३	३	१	निं सां	नि सां
”	३	१	ध प	धं प
”	५	१	× ध प नि सा ° सां	× ध पं नि ° सां सं
”	९	१	× प प प ध ° प	× प प प ध ° प
”	११	१	× प मं ग रे ° रें	× प मं ग रे ° रें
”	१३	१	× नि सां रें गं ° गं	× नि सां रें ग ° गं
”	१५	१	× म ग रे रे ° प	× मं ग रे ° रे प
”	१२	४	का ऽ री ऽ	का ऽ री ले
१४	अन्तिम दो पंक्ति के पहले	–	(१) षीड़व	(१) षाड़व
१६	३	३	° रें	रे
”	१२	५	रि	जे
”	१५	५	रे	रें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	विभाग	अशुद्ध	शुद्ध
२१	अन्तिम	१	यो	पो
२२	२	२	छे ऽ ड़ो ऽ ऽ	छे ऽ ड़ो ऽ न
२२	११	१	मं रें	० मं रें
२२	११	४	म़ म ग	३ मैं म ग
२३	७	२	प	प नि
२४	१५	४	पं	प
२५	३	१	प़	० प़
२६	१	३	२ प	२ प प
३०	२	४	ह	में
,,	२	५	म	–
३२	१	६	–	मं
३३	३	१	सा रे रे ग़ ग़	स र र गं ग
३३	७	१	× ० रें मं रें रें रें	० रें मं रें रें रें
३४	५	४	५ ग़ म रे	५ ग़ म रे
,,	५	३	प म	० प म
३५	७	५	० ध नि़	० ध नि़
३५	१३	५	० प	० प प
,,	१७	५	० नि़ प प ग़	० नि़ प ग़
३७	७	३	नि़ ध नि़ प	नि़ नि नि़ प
,,	११	२	२ ध प	२ नि़ ष
,,	१५	२	नि	नि़
३८	–	–	सुद्राकी कन्हाड़ा	सुद्रा की कन्हाड़ा (चौताल)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	विभाग	अशुद्ध	शुद्ध
३८	६	६	—	द्रा ऽ
,,	७	२	नि	नि
३९	५	३	नि ध	२ नि ध
,,	५	४	२ नि	० नि
,,	५	६	म म	म ग म रे सा
,,	११	४	सां–	सां सां
४२	९	२	—	सं न – रें
,,	१०	२	नी ऽ रे	नी ऽ
४५	३	५	३ नि प	३ नि प
,,	३	६	म म	म म
,,	३	७	—	४ प ग
४७	३	३	२ म ग	२ म ग
,,	५	४	निं रें	न रें सं
,,	५	५+६	३ २ ४ सां सां सां सां	३ ४ सां, सां सां सां
,,	११	४	म ग	म ग
,,	१३	४–५	३ मं गं गं	३ ४ मं गं नि रें सां
४९	१	२	धं	ध
५१	१	३	० रें	रे
,,	३	२	० ० रें रें	० रें रें

नोट—समर्पण के पृष्ठ पर अवबन खाँ साहब के स्थान पर अब्बन खाँ साहब।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ग्रन्थकार)

श्री प्राणकृष्ण चट्टोपाध्याय, (पानू बाबू

संगीत-रत्नाकर, संगीतालङ्कार, संगीत नायक, संगीत वि
संगीत रत्न, इत्यादि, इत्यादि ।

नोट—मासिक पेंशन के रूप में भारत सरकार द्वारा पुरस्कृ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi